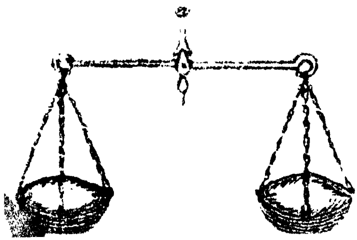
धर्मतुला

Revised Edition



[दाम २ पैसा

॥ पितृपुत्रपवित्रात्मने नमः ॥

धर्म्मतुला

परलोक की चिन्ता

हे प्यारो यदि कोई आपसे पूछे कि क्या अपने पाप कटवाने और परलोक बनाने की कुछ चिन्ता आपको है तो आप यह जवाब देते हैं कि हाँ; अगर चिन्ता नहीं तो यह सब पूजा-पाठ, धर्म्म-पुण्य, दान स्नान हम किस कारण करते हैं अपने पाप छुटवाने और परलोक बनाने के लिये ही हम यह करते हैं।

सच है आपके ऐसे धर्म्म कर्म्म करने से जाना जाता है कि आपको परलोक की कुछ चिन्ता है। ऐसी चिन्ता करना बहुत उचित है क्योंकि दो चार दिन के पीछे हमें मरना और परमेश्वर के सामने जाके लेखा देना है कि हमने अपने जीते जी क्या भला और क्या बुरा किया। अब विचार करना चाहिये कि परमेश्वर पवित्र और धर्म्मी है और हम लोग अशुद्ध और पापी हैं। फिर पापाधीन और मन मलीन होके हम उसके सामने क्योंकर जा सकते हैं। इसीलिये हर एक मनुष्य को बहुत उचित है कि अपने जीते जी अपने पापों को छुटवावे न हो कि परलोक में जब परमेश्वर के आगे खड़े हों तब पछतावें और लजावें। हम अपने जीते जी परलोक की चिन्ता और मुक्ति का उपाय कर सकते हैं पर मरने के पीछे कुछ न बनेगा।

दोहा ।

कल करन्ते आज कर, आज करन्ते अब ।
क्षण में प्रलय होएगा, फिर करेगा कब ॥

जानना चाहिये कि महा दुष्ट आत्मा जो शैतान हैं उसके बहकाने से सब मनुष्य ऐसे बहक गये हैं कि वे धर्म्म की बात और परलोक की कथा सुनने में मन नहीं लगाते । जो राग रङ्ग की बातें करो तो लोग जी लगा कर सुनते हैं । किस्सा कहानी सुनाओ या रुपये पैसे की चर्चा करो या किसी प्रकार की चिकनी चुपड़ी बातें कहो तो सब के कान लग जाते हैं । पर जब परमेश्वर की कथा सुनाओ या धर्म्म का उपदेश करो तब लोग अपने मुँह फेर लेते हैं ।

दोहा ।

सांचे कोई न माने, झूठे जग पतियाय ।
गली गली गोरस फिरे, मदिरा बैठ बिकाय ॥

पाप के कारण सब मनुष्यों का जाति स्वभाव बिगड़ गया और सब का मन बुराई में लिपट रहा है । वे बुराई की बातें कहना और सुनना चाहते और बुराई के काम करने और देखने से आनन्दित होते हैं । हाँ, सारे संसार के लोग पाप में डूब गये और केवल थोड़े ऐसे हैं जो सचमुच इस दुर्दशा से निकलना चाहते हैं । अकसर लोग ऐसे बे सोच और बे समझ है कि अपनी मुक्ति की कुछ चिन्ता नहीं करते पर केवल अपने पेट के लिए मरे जाते हैं, कि हम क्या खावें और पीवें और जब खा पी चुके तब निश्चिन्त हो बैठे रहते हैं ! ऐसे लोग अपनी देह को पालते पर अपनी आत्मा को गँवाते हैं । मिट्टी को बचाते और आत्मा को खो देते हैं । देह केवल आत्मा का घर है

सो जो कोई अपनी आत्मा कल्याण के विषय निश्चिन्त होके केवल अपने देह के लिये चिन्ता करता सो उस मूर्ख के समान है जो घर के मालिक को भूल कर केवल घर ही की रक्षा करता है। इससे जाना जाता है कि जो कोई अपने पाप छुटवाने और आत्मा को बचाने का कुछ उपाय ढूँढ़ता है सो अच्छा करता है।

दोहा।

जिन खोज्यो तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
बग बेचारा क्या करे, रहे किनारे बैठ॥

मुक्ति का उपाय

अब पूछा चाहिये कि किस उपाय से पाप कट जायें और मुक्ति प्राप्त हो। मुक्ति का उपाय सोच समझ के करना चाहिये न हो कि वह पीछे झूठा निकले और मुक्ति का आसरा भी झूठा ठहरे। जब हम अपने रुपये में से किसी को कुछ उधार देना चाहते हैं तो पहिले बहुत पूछ ताछ और सोच विचार करते हैं उधार लेने वाला सच्चा है कि झूठा और जब हमारे मन में कुछ सन्देह नहीं रहता तब देते हैं। अपना धन बचाने की हम बड़ी चौकसी करते हैं पर हमारी आत्मा सारे जगत के धन से बहुमूल्य है। क्या उसे बचाने के लिये सोच विचार न करोगे? क्या हर एक का कहना बिना परखे जल्दी से मानोगे? क्या हर एक को बिना सोचे हुए गुरू करोगे? जो हम ऐसा करें तो हमारे आत्मा के नाश होने का बड़ा खटका है और जो आत्मा को खो दिया तो जानो कि सब कुछ खो दिया। भला जो पाप छुटवाने के उपाय याने जानो कि

पूजा-पाठ और धर्म्म-कर्म आप करते हैं सो उन्हें हम अब विचार की कसौटी पर कसते हैं।

कई लोग मन्दिरों और स्थानों में लकड़ी, पत्थर वग़ैरह की मूरतें स्थापन करके पूजते हैं। अब विचार करना चाहिये कि मूरत क्या पदार्थ है। बढ़ई लकड़ी काट के एक टुकड़े को अपने हथियारों से ऐसा गढ़ता है कि कोई सूरत बन जाती है। और फिर हाथ, पाँव, मुँह, नाक, कान, सब बना के और रङ्ग चढ़ा के ग्राहक के हाथ बेचता है। फिर उसी लकड़ी का दूसरा टुकड़ा लेके वह बेलन पटरा या कोई और वस्तु बनाता है और जो चैलियाँ उससे निकलती हैं उनको वह अपना खाना पकाने के लिये या तापने के लिये जलाता है। फिर संगतराश पत्थर के दो टुकड़े करके आधे से कृष्ण या महादेव की या किसी और की मूरत तराशता है और दूसरे आधे से सिल या चक्की बनाता है। फिर ठठेरा पीतल की मूरत और सुनार सोने चाँदी की मूरत और कई लोग अपने हाथों से मिट्टी की मूरतें पूजने के लिये बनाते हैं और उन्हें देवी देवता समझ के स्थापन करते हैं। फिर जो सोने चाँदी की मूरत हो तो उन को कोठरी में ताला बन्द करके बड़ी चौकसी से रखते हैं न हो कि कोई चोर उन्हें चुरा ले। हे प्यारो क्या इतनी बुद्धि नहीं है जो समझ सको कि जैसे घड़े, लोटे, बेलन, पटरे आदि हैं वैसे ही मूरत भी हैं केवल मिट्टी, काष्ट, धातु वग़ैरह की वस्तुएँ हैं सो किस लिए उनकी पूजा करते हो? उनकी आँखें तो हैं पर वे देखती नहीं, उनके कान तो हैं पर वे सुनती नहीं, उनके पाँव हैं पर वे चलती नहीं, उनके हाथ हैं पर वे कुछ छूती नहीं, उनके पेट हैं पर वे कुछ खाती नहीं, उनका गला है पर वे श्वास नहीं लेती हैं उनको तोड़ो जोड़ो वे कुछ नहीं जानतीं। वे कटाए कटती और

जलाये जलती हैं उनमें जीव नहीं है। कहो, ऐसी जड़ वस्तुओं की पूजा आप लोग चैतन्य होके क्यों करते हैं। यह भी जानते हो कि कारीगर अपनी कारीगरी की वस्तु से कहीं बड़ा है। फिर जब कारीगर की बनाई हुई काष्ट, धातु, पाषाण की मूरतों को पूजते हो तो उनके कारीगरों की याने बढ़ई, ठठेरे, सुनार, संग-तराश की पूजा क्यों नहीं करते? हे मित्रो, याद रखो परमेश्वर सारे जगत का बनानेवाला है। अब कहिये क्या सब का बनाने-वाला किसी कारीगर के हाथ से बनाया जायगा।

पर शायद कोई कहे कि जब तक ब्राह्मण के हाथ से मूरत की स्थापना नहीं हुई तब तक उसको देवता करके नहीं मानते और उसकी पूजा नहीं करते हैं। अब हम पूछते हैं कि ब्राह्मण किस प्रकार से काष्ट धातु पत्थर को देवता बना सकते हैं। वे तो आप सब मनुष्यों के समान क्रोध, लोभ, मोह के वश में हो के पापी ठहरते हैं। फिर क्या ईश्वर पापियों के अधीन होगा? बात यह है कि ब्राह्मण सब और मनुष्यों के समान दुर्बल और लाचार हैं। वे काष्ट और पत्थर से पशु या मनुष्य नहीं बना सकते तो फिर देवता क्योंकर बना सकेंगे। निदान यह बात अनहोनी है।

फिर जो मूरतें बनाते हो सो सर्वथा कुरूप और बेडौल हैं। ब्रह्मा की मूरत को देखो उसके चार मुख हैं। फिर गणेश को देखो, उसका हाथी का सा सिर और बड़ी तोंद है और काली देवी को देखो वह मुंह खोले जीभ निकाले, एक हाथ में मुण्ड लिये और दूसरे हाथ में रुधिर से भरा हुआ खप्पर धरे मुर्दे के ऊपर पांव रखे ऐसी जान पड़ती है कि जैसा नित्य मार डालना और मनुष्य का रुधिर पीना चाहती है। फिर महादेव को देखिये शरीर पर मरघट की राख लगाये, साँप लिपटाये, गले

में मुण्डमाला पहिने, मृगछाला ओढ़े, डमरू हाथ में लिये भांग धतूरा पिये, लाल आँखें किये हुये भयानक भेष बनाए बैठा है। या उसके लिंग की मूरत को देखो और अब कहो क्या ऐसी कुरूप और घिनौनी वस्तुएं पूजने के योग्य हैं।

दोहा

जीवत ईश्वर छोड़ के, पूजें काठ पाषाण।
तरिहैं नाहीं कबहूं वे, धर्म्म ग्रन्थ प्रमाण॥

एक दृष्टान्त सुनो। अगर मेरा कोई बेटा ऐसा अज्ञान और निर्बुद्धि हो कि मिट्टी, लकड़ी की कोई मूरत बनावे और उसे अपना पिता समझ के कहे, कि हे पिता, आपने हमें जन्म दिया आप हमें पालते पोषते हैं, आपको हम हाथ जोड़ कर मानते हैं। जो लड़का ऐसा करके अपने पिता का नाम और महात्म्य मूरत पर लगावे तो आप सब के सब निःसन्देह कहेंगे कि अरे लड़के तू बावला हो गया। क्या तू मिट्टी के ढेले या लकड़ी के कुन्दे को पिता कर मानता है। अब सुनो। परमेश्वर हमारा जन्मदाता और जगत का पिता है और हम उसके पुत्र हैं। सो जो लोग मूरत बनाते और जन्मदाता का नाम और महात्म्य उस मूरत पर लगाते हैं क्या आप ऐसों को बुद्धिमान कहेंगे? क्या परमेश्वर न कहेगा, कि हाय मेरे लड़के मुझे छोड़ के और मूरतों का पीछा करके भटक गये हैं?

बात यह है कि परमेश्वर की न सूरत, न मूरत है क्योंकि वह आत्मा है। उसको किसी ने कभी नहीं देखा न कोई उसे देख सकता है। उसका न रूप है, न रेखा है, और उसने मूरत को बनाना और उन्हें पूजना पुजवाना मना किया है। इसलिये

जो कोई किसी मूरत को बनाता या पूजता या पुजवाता है सो अज्ञान और पापी है।

फिर हम पूछते हैं कि मूरत पूजने से क्या लाभ होता है? क्या मिट्टी, लकड़ी, पत्थर की पुतली हमारे दुःख और पाप काट सकती है? क्या कोई मूरत हमें भक्ति मुक्ति दे सकता है? कभी नहीं। यह बात सच है कि उनके पूजने से हमारा पाप और औगुण और बढ़ जाता है। तनिक विचारो जब कोई मनुष्य व स्त्री महादेव के लिङ्ग की पूजा करे और उस लिङ्ग की सूरत पर ध्यान करे तो क्या इससे उसका मन शुद्ध होगा कि अशुद्ध? लिङ्ग की मूरत पर ध्यान करने से मनुष्यों के मन में और स्त्रियों के मन में काम और कुइच्छा उपजे तो उपजे पर धर्म्म और सत कभी नहीं उपजने का।

हम जानते हैं कितने लोग यह कहते हैं कि हम पत्थर लकड़ी की मूरत को नहीं पूजते हैं पर वह देवता जिसकी यह मूरत है उसी को हम पूजते हैं। भला अब देखा चाहिए कि जिनको हम लोग देवी या देवता और अवतार करके मानते और जिनकी मूरत बना के पूजते हैं सो पूजने के योग्य हैं कि अयोग्य। शास्त्र पुराणों से निश्चय होता है कि देवता और अवतार सब काम, क्रोध, लोभ, डाह और अहंकार के बस में थे। उचित नहीं कि इस स्थान पर हम देवताओं के कुकर्म इत्यादि बातों का वर्णन करें। शास्त्र पुराणों में उनके चरित्रों का वर्णन बड़े विस्तार से किया गया है और उनसे यह जाना जाता है कि बहुत प्रकार के अनुचित काम इन देवताओं ने किये। वे सब पापी ठहरे और अब कहिये क्या किसी पापी की पूजा या उसकी मूरत की पूजा करना उचित है कि अनुचित?

पर क्या जाने कोई कहे कि सामर्थी को नहीं, दोष हमारे देवता ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, राम, कृष्ण इत्यादि सब सामर्थी थे इसलिये उनको कुछ दोष नहीं है। इसका जबाब यह है कि उन पुस्तकों से जाना जाता है कि ये देवता सामर्थी नहीं पर सामर्थ्य रहित थे। किसी किसी देवता ने पराई स्त्रियों से कुकर्म किया

वे काम और कुइच्छा के मारे पराई स्त्री के बस में आके सामर्थ्य रहित ठहरे और स्त्रियों से जो अबलाएं कहलाती हैं जब दब गये और उनमें इतनी भी सामर्थ्य और बल न रहा जो अपनी कुकामनाओं को मार सकते तो फिर कौन उनको सामर्थी कहेगा।

अबला के बस निर्बल जोई।
ताहि सामर्थी कहे न कोई॥

यह बात सच है कि रामचन्द्र जी बलवन्त दिखाई देते हैं कि उन्होंने लङ्का में जाके सहस्रों राक्षसों को मार डाला। पर जो उन पोथियों में सच लिखा है तो रामचन्द्र जी से अधिक बलवान हनुमान जी ठहरे क्योंकि उसमें लिखा है कि जब वे लङ्का को गये तो हनुमान जी समुद्र को लांघ गये पर रामचन्द्र जी लांघ न सके और इस कारण पुल बाँधा। भला जो रामचन्द्र जी ऐसे अशक्त और बलहीन हो गये तो फिर उनको सामर्थी कैसे कहें।

अवतारों के विषय में।

फिर अवतारों के विषय में कुछ और सुनो और सोचो जो वे सच्चे भी होते तौ भी उनसे मनुष्यों को कुछ लाभ नहीं है क्योंकि शास्त्र पुराणों से जाना जाता है कि सब के सब अवतार अपने अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए आये

या ऐसे काम करने को आये कि जिनसे संसार का कुछ भी भला नहीं होता है।

अवतारों ने यदि चार वेदों को समुद्र से निकाला तो निकाला परन्तु इसके मानने से पापी लोग तो पाप के समुद्र से बच नहीं निकलेंगे। धरती को उन्होंने स्थिर किया तो किया पर इसके मानने से हमारा चंचल मन तो स्थिर नहीं होता। रावण, कंस आदिक को उन्होंने नाश किया तो किया पर इससे पाप का तो नाश नहीं होता है। औरों को उन्होंने छला तो छला, नास्तिक मत फैलाया तो फैलाया पर कहिये क्या उनके ऐसे छल बल की बातें मानने से हमारे मन का छल बल और पाप मिट जाएगा? फिर कहते हैं कि जब सब अवतार अपना अपना स्वार्थ कर चुके तब मर गए।

भला अब बताइये उनसे हमें क्या काम? कोई कहे दसवां अवतार अर्थात् अकलंकी अवतार आने वाला है, उसकी राह हम देखते हैं, वह हमारे काम आवेगा। कहते तो हैं कि आवेगा और यह भी कहते हैं कि सब पापियों को नाश करने आवेगा! अब थोड़ा सा सोचो। कलयुग में अर्थात् आजकल सब लोग पापी हो गये हैं। फिर जब वह अवतार पापियों को नाश करने को आवेगा तो हमारा भी नाश होगा। कहिये इससे भी हमें क्या लाभ?

इसके सिवा याद रखिये कि जो आचारी बिचारी मनुष्य इन अवतारों की कथा और चरित्र पढ़ेगा सो निश्चय करके कहेगा कि वे परमेश्वर के अवतार हो नहीं सकते क्योंकि उनमें परमेश्वर के गुण और लक्षण नहीं दिखाई देते हैं। क्या परमेश्वर मारने और घात करने और छलने और लीला क्रीड़ा करने और नास्तिक मत फैलाने को अवतार लेगा?

वह कभी ऐसा न करेगा। ऐसा नीच कर्म और दोष परमेश्वर पर लगाना महा पाप और पाखण्ड है। परमेश्वर के अवतार में परमेश्वर ही के गुण और स्वभाव प्रगट होंगे जैसे कि परमेश्वर पवित्र और प्रेमी और धर्म्मी और न्यायी और सत्य और दयालु और सामर्थी है वैसा ही चाहिये कि उसका अवतार भी पवित्र और प्रेमी और धर्म्मी और न्यायी और सत्य और दयालु और सामर्थी होवे। पर ऐसे गुणों का पता तक भी किसी अवतार में नहीं लगता है।

गुरुओं के विषय में।

शायद कोई कहे हमारे देवी या देवता सत्य ठहरें या झूठ हम क्या जानें हमारे गुरू जानें क्योंकि उनकी बात हम मानते हैं। यह बात सच है कि लोगों के बीच में गुरू बहुत कहलाते हैं और लोगों की मुक्ति के लिये गुरू चाहिये भी।

धर्म करो विविध व्रत नेमा।
बिन गुरु जानो सकल अछेमा॥
बिन गुरु किये मुक्ति नहिं होई।
शुभ गति कभू पावे न कोई॥

सो मुक्ति को प्राप्त करने के लिये गुरू किया चाहिये इसमें कुछ सन्देह नहीं। पर कौन सा गुरू।

कनफुकवा गुरु बहुत हैं, और भेद के गुरु और।
सत्य गुरु कोई न मिला, कि ठीक बतावे तौर॥

कहते हैं कि

पानी पीजिये छान, और गुरू कीजिये जान॥

अब देखना चाहिये कि वे लोग समझ बूझ के गुरू करते हैं कि नहीं और वे गुरू कैसे हैं। सब लोग जानते हैं कि वे

सब और मनुष्यों के समान काम, क्रोध, लोभ, डाह, अहंकार के बस में होके पापाधीन ठहराते हैं। फिर जो गुरू आप ही पापी हैं तो हमारे पाप को किस प्रकार से छुटावेंगे और क्यों कर हमारा निस्तार कर सकेंगे ?

लोभी गुरू लालची चेला।
दोनों नरक में ठेलम ठेला॥

सच है हमारे गुरू लोग हमको बहुत कुछ बताते हैं और कान में फूँक के लोगों का गुरुमुख करते हैं और दान दक्षिणा लेते हैं पर विचार करना चाहिये कि कान में फूकना और दान दक्षिण लेना बहुत सहज बात है। और वे जो मन्त्र लोगों को देते हैं क्या वे उनको समझते हैं ? और जो वे सिखाते हैं उनसे लोगों का क्या लाभ है ? एक गुरू कहता है कुछ और दूसरा कहता है कुछ। एक पण्डित कुछ बताता है और दूसरा पण्डित उसको खण्डन करता है। गुरुओं में बड़ा ही झगड़ा है। कोई अठासी सहस्र ऋषियों ने अठासी सहस्र भिन्न-भिन्न मत खड़े किये और लोग कहते भी हैं जितने मुनि उतने मत। अब कहो उनमें कौन मत सत्य है और कौन झूठ। परमेश्वर तो एक ही है और उसका मत भी एक ही होना चाहिये। और जो कोई कहे कि ये अनेक मत सब ही परमेश्वर के हैं तो वह उसको बहुरंगी ठहरा कर झुठलाता है बुद्धिमान मनुष्य के मन में निश्चय यह खटका उपजेगा कि यह सब मनमते हैं।

जाके मन जस भावना आवा।
सो तैसा वर्णन कर गावा॥

हम किसी से पूछते हैं कि भाई कलकत्ता कहाँ है वह जवाब देता है कि दक्खिन में है। फिर दूसरे से यह बात पूछते

हैं और वह कहता है कि दक्खिन में नहीं है उत्तर में है। तब तीसरे मनुष्य से पूछते हैं और वह कहता है वह न तो दक्खिन न उत्तर में बल्कि दक्खिन पश्चिम के कोने में है। फिर चौथे से पूछते हैं और वह जवाब देता है कि तीनों की बातें झूठ हैं, हमारी बात सच जानो कि कलकत्ता ठीक पश्चिम में है। फिर और लोग और ही जवाब देते हैं तो सभों ने फिर भिन्न भिन्न बातें कहीं। अब हम विचार क्या करें; किसकी बात सच्ची मानें; किस मार्ग से कलकत्ता जाएँ? इसी प्रकार लोग भिन्न भिन्न गुरुओं से पूछते हैं कि मुक्ति का मार्ग कौन है। अब कोई कुछ कहता है और कोई कुछ, तो कहो किसकी बात सच मानें?

दोहा।

अपने अपने मन की, सभों ने लीनी मान।
सत्य धर्म्म में दुबधा रही, पड़ी न काहू जान॥

बात यह है कि हमारे गुरु परमेश्वर का मत नहीं पर अपना अपना मनमता बता देते हैं और मनमता से किसी भी मुक्ति का ठिकाना कभी न लगा और न कभी लगेगा। दूसरी बात यह है कि ऐसे गुरू आप पापी होके किसी के पाप काट नहीं सकते हैं। इसलिये जो उन पर आसरा रखता है सो बालू की भीत पर आसरा रखता है।

यह बात सच है कि हमारा निस्तार करने के लिए गुरू चाहिये क्योंकि अपनी बुद्धि और मति से कोई मनुष्य मुक्ति का उपाय नहीं निकाल सकता है। पर गुरू सच्चा होवे और उसके पास मुक्ति का सत्य ज्ञान हो और उसका यह प्रताप हो

कि उसके शिष्यों को उसके पुण्य प्रताप से मुक्ति पदार्थ मिल जाये। किसी ने कहा है:—

दोहा

गुरु ऐसा चाहिए, जस सिकलीगर होय।
दिनन दिनन का मोरचा, पल में डारे खोय॥

सच्चा गुरू किया चाहिये। फिर सच्चे गुरू के कौन से लक्षण हैं? वह पाप रहित हो और सर्वज्ञानी और सामर्थी और परस्वार्थी दयालु, कृपालु हो। वह पाप और भूल को हर सके और भक्ति मुक्ति दे सके। ऐसा गुरू भला कहाँ है, आप लोग तो आपही जानते हो कि हमारे गुरू जो हैं सो हमारे समान पाप किया करते हैं और जो कुछ वे बताते और जो वे पूजा करते कराते हैं सो अपना स्वार्थ करके बताते और कराते हैं। वे सब के सब भूले भटके और अधर्म्मी कुकर्म्मी और अपस्वार्थी, असमर्थी हैं। यह बात सच है कि लोगों का धन सम्पत्ति हर लेने को वे बहुत चतुर और तैयार हैं पर सम्पत्ति को हरना और बात है और पाप को हरना और बात है। एक ऐसा धर्म्मात्मा महागुरू जो अपने पुण्य और प्रताप से अपने चेलों के पाप हरता है सो मसीही धर्म्म में ही है। परमेश्वर की ओर से वह अवतार होके आया है, उसका वर्णन हम पीछे करेंगे।

गंगा स्नान के विषय में

कितने लोग समझते हैं कि गङ्गा स्नान करने से पाप छूटेगा। अब विचार किया चाहिए कि गङ्गा जल में क्या गुण है। गङ्गा में नहा के कोई अपने शरीर को धोवे और मले तो शरीर शुद्ध और निर्मल अवश्य होगा पर पाप अर्थात् झूठ, छल,

चोरी, परस्त्री गमन, क्रोध, लोभ अरु और सब प्रकार की बुरी बातें जो हैं सो शरीर के कुछ ऊपर ऊपर नहीं पर मन के भीतर ही लगी हैं सो वह जल से क्योंकर छूटेंगी ? कोई धोबी हो जो सब मैले कपड़े एक सन्दूक में भरे और उसको बन्द करके सन्दूक को बाहर बाहर बहुत धोए और मले, क्या सन्दूक को बाहर बाहर मलने से भीतर के कपड़े साफ होंगे ? अब याद रक्खो कि हमारा मैला मन जो है सो देह के भीतर है। क्या देह के धोने धाने से साफ़ होगा ?

दोहा

मन कपड़ा मैला भया, लागो बड़ो बिकार।
यह कपड़ा किम धोइयो, नहनियों करो विचार ॥

फिर जो पानी मन के भीतर भी पहुँचे तौ भी पाप और औगुण उससे कभी नहीं मिटेंगे। एक बात सुनो। किसी डाकू ने किसी के घर में डाका मार के उसका रुपया चुराया और जाके गङ्गा में स्नान किया। पीछे मालिक ने उसे पकड़ लिया और पूछा कि अरे डाकू हमारा माल किस लियें लूटा। उसने उत्तर दिया कि भइया आप हमारे ऊपर काहे को रिसियाते हो। आपका रुपया चुरा के हमने पाप तो किया पर पीछे हमने जल्दी जाके गङ्गा जी में स्नान भी कर लिया। गङ्गा जो का बड़ा महात्म्य और गङ्गा जल का बड़ा गुण है। उसमें जो एक बार भी स्नान करे तो उसके सब पाप कटते हैं बस मेरा भी पाप छूट गया अब हम पवित्र और भले मनुष्य हैं फिर मेरे ऊपर क्यों दोष लगाते हो। जो डाकू ऐसा कहे क्या आप उसकी बात को अच्छी कहेंगे। आप उसे कभी नहीं छोड़ेंगे। आप उसकी बात ठट्ठे की बात जान के कहेंगे ए

चोर गङ्गा जी का महात्म्य और गङ्गा जल का गुण जो हो सो हो तौ भी तुम चोर हो और तुमको दण्ड दिया चाहिये। आप चोर के स्नान करने का उज़र नहीं मानते हैं फिर क्या परमेश्वर हमारे गङ्गा में स्नान करने का उज़र मानेगा? कभी नहीं। बड़ी अदालत के दिन में जब वह हमसे लेखा लेगा और आप से पूछेगा कि तूने किस लिये सब प्रकार का पाप किया, तुमने किस लिये हमारी सब आज्ञा टाल दी? क्या आप यह उत्तर देंगे कि हमने बहुत पाप तो किया पर पीछे गङ्गा में नहा के सब कुछ धो दिया। बस हमारा पाप गया और हमारा मन पवित्र हुआ। क्या परमेश्वर आप का यह उज़र मानेगा? कभी नहीं। भाइयो धोखा मत खाओ। परमेश्वर ऐसी अज्ञानता और ठट्ठे की बात न मानेगा। थोड़ा तो सोचिये और अज्ञान मत होइये। गङ्गा जल से या किसी जल से हमारा शरीर चाहे शुद्ध क्यों न हो पर मन मैला का मैला बना रहेगा।

मन मलीन तन सुन्दर कैसे।
विष रस भरा कनक घट जैसे॥

विश्वास करना

शायद कोई कहे विश्वास फलदायक है। केवल स्नान करने से पाप नहीं छूटता पर जो कोई विश्वास करके स्नान करे तो गङ्गा जल से निःसन्देह उसका पाप छूटेगा। उसका उत्तर यह है कि विश्वास करना बड़ी बात तो है पर हम पूछते हैं कि कौन सी बात पर विश्वास किया चाहिये सत्य बात पर कि झूठ बात पर? कोई मनुष्य कङ्कर को रुपया

जान कर विश्वास कर बटोरे तो क्या उसका विश्वास फल-दायक होगा ? क्या वह रुपया वाला हो जायेगा ? कभी नहीं। क्योंकि उसने झूठी बात का विश्वास किया। कङ्कर तो कङ्कर है रुपया कभी नहीं हो सकता है। इसी तरह से कोई मनुष्य विश्वास से स्नान करे तो उसका विश्वास फलदायक नहीं होगा और उसका पाप न छूटेगा क्योंकि उसने झूठ बात पर वश्वास किया। जो उसको मानो विश्वास भी हो तौ भी जल जो है केवल शरीर का मैल छुड़ावेगा पर मन को कभी निर्मल नहीं करेगा।

दान पुण्य

फिर बहुत लोग यों समझते हैं कि धर्म्म पुण्य करने से हम बैकुण्ठ को जाएंगे। कंगालों को कुछ देना और दुखियों का भला करना बहुत अच्छी बात है इसमें सन्देह नहीं पर जो कोई समझे कि दान पुण्य करने से हमारा पाप कटेगा सो भूल की बात है। सब प्रकार के अच्छे काम करना हम को और सब मनुष्यों को उचित है क्योंकि परमेश्वर की आज्ञा यह है कि औरों की भलाई करो। जो कोई ऐसा नहीं करता वह पाप करता है। जो हम अपने नौकर को कुछ हुक्म देवें और वह उस हुक्म को माने तो हम यह नहीं कहते कि तुमने बड़ा पुण्य किया जो मेरे हुक्म को माना। वह नौकर है और तलब पाता है बस उसको हुक्म मानना चाहिये। जो वह न माने तो उसको पाप होता है। इस रीति से परमेश्वर हमारा मालिक है और हम सब लोग उसके नौकर हैं। वह हमको खाना कपड़ा और सब कुछ देता है और उसका हुक्म है कि सब प्रकार के अच्छे काम करना और बुराई न करना। जो हम

उसका हुक्म न मानें तो हम पाप करते हैं। जो हम उसका हुक्म मान के अच्छे कर्म्म-धर्म्म करें तो हमको ऐसा करना उचित है पर उसके करने से कुछ धर्म्म की पूंजी इकट्ठी नहीं होती है कि जिससे अगले पिछले पाप मिट सकें।

फिर आप विचार करिये कि हमारे दान पुण्य किस प्रकार होते हैं। एक हाथ से पुण्य दूसरे हाथ से चोरी। ऐसा बारम्बार होता है कि जब घूस या अन्याय से लेने से, या छल बल कर और बेईमानी या उपद्रव करने से किसी मनुष्य ने कुछ रुपया बटोरा तब अपने उपद्रव को या और पापों को कटवाने के लिए वह थोड़ा दान पुण्य भी करना चाहता है। क्या राई भर पुण्य से पर्वत के बराबर पाप मिट जायेंगे।

दोहा

चोरी करे निहाई की, करे सुई का दान।
ऊँचे देखे चढ़ के, केतिक दूर बिमान॥

और जो हम बहुत पुण्य भी करें तौ भी परमेश्वर उसको पुण्य करके नहीं मानेगा और न इसके लिए हमारा एक भी पाप क्षमा करेगा। एक बात सुनिये। किसी आदमी ने खून किया। वह पकड़ा गया और उसने हाकिम के सामने विन्ती की कि हे साहिब हमने खून तो किया परन्तु उसके पीछे आज लों बहुत से धर्म्म के काम किये। इस कारण आप हमारा अपराध क्षमा करके हमको छोड़ दीजिये। अब कहिये क्या हाकिम उस खूनी की बात मानेगा और उसे छोड़ेगा? कभी नहीं। पर यह कहेगा कि तुमने पुण्य धर्म्म किये तो किये पर इनसे तुम्हारे खून का अपराध न छूटेगा। कानून के अनुसार तुम्हारा न्याय होगा। इसी रीति से परमेश्वर के आगे हमारे पुण्य और धर्म्म की बात न चलेगी। फिर यह भी सोचना चाहिये कि सब

मनुष्यों के सारे पुण्य और धर्म्म में बट्टा लगा है। सभों के मन में पाप का मैल लगा है और विचार करने से सब लोग जान सकते हैं कि जो मन मैला हो तो सब कर्म्म-धर्म्म दान पुण्य भी मैले होंगे। खारी सोते के कुएँ में से मीठा जल कैसे निकलेगा? अशुद्ध और मैले मन से निर्मल धर्म्म और चोखा पुण्य कैसे निकलेगा?

जिस का हृदय अशुद्ध है।
उसका सब काम विरुद्ध है॥

आप यह भी जानते हो कि परमेश्वर महा शुद्ध और महा पवित्र है इसलिये व किसी जन के अशुद्ध कर्म्म-धर्म्म और खोटे पुण्य को ग्रहण न करेगा पर वह उससे घृणा करेगा। जैसा खोटा रुपया बाजार में नहीं चलता वैसा ही परमेश्वर के घर में किसी मनुष्य का खोटा पुण्य और धर्म्म नहीं चलने का फिर इससे बैकुण्ठ कैसे प्राप्त होगा।

हमारे धर्म्म और पुण्य की एक बात यह भी है कि हम पण्डित से शास्त्र पुराण की कथा सुनते हैं जो शास्त्र पुराण की बातें सच भी होतीं तौ भी हम ठीक जानते हैं कि इस के सुनने से आपको कुछ लाभ नहीं हो सकता क्योंकि जो जो बातें पण्डित पढ़ते हैं उनको आप अकसर कर के कुछ भी नहीं समझते हैं।

फिर जो पण्डित कथा का अर्थ करे तो इससे बहुत करके बुराई निकलती है क्योंकि जो कथा वह सुनाता है सो पुराण अरु और पुस्तकों की कहानियाँ हैं। बल्कि, उनमें बहुत ऐसी कहानियाँ भी हैं कि जिनके सुनने से सुननेवालों के मन में सब प्रकार की कुचिन्ता और कुइच्छा उपजती है।

बहुत लोग समझते हैं कि जो हम घर बार छोड़ के जङ्गल में जाके फ़क़ीर बन बैठें तो पाप छूटेगा और मन निर्मल होगा। पर जानना चाहिये कि यदि योग वैराग साधने से मुक्ति प्राप्त होवे तो चाहिये कि सब लोग जो मुक्ति की खोज में हैं क्या पुरुष क्या स्त्री जितने जो हैं सो सब के सब अपने घर द्वार छोड़ छोड़ कर और बन में जाकर वैरागी वैरागिन बन बैठें। तब बन कहां रहा वन तो बस्ती हो गया। फिर जो सब लोग वैरागी और फ़क़ीर हो गए तो खेती बारी कौन करेगा और अनाज कहां से होगा! सब लोग भूखों मरेंगे कि नहीं? इससे जाना जाता है कि योगी वैरागी का मत भी मन-मता है।

फिर फ़क़ीरों की चाल चलन भी परखा चाहिये। यह बात सच कि उनमें से कोई कोई तो कुछ योग बैराग साधते हैं पर बात यह है कि जिस हाल में सब मनुष्यों के मन पाप से मलीन हैं तो वैरागियों के मन मलीन हैं और जब तक मन मलीन और अशुद्ध है तब तक सारा जप तप, योग वैराग भी अशुद्ध है और अशुद्ध कर्म्म से परमेश्वर क्योंकर प्रसन्न होगा।

पर सब कोई जानते हैं कि दो एक को छोड़ के सब फ़क़ीर लोग पैसा कमाने के लिये केवल वैराग और फ़क़ीरों का भेष लिये फिरते हैं और सचमुच वे दूसरे लोगों से बुरे हैं। किस लिये बुरे हैं कि वे आठों पहर बेकार और आलसी हो बैठे रहते हैं। और तुम जानते हो कि सुस्त और आलसी जन के मन में सब प्रकार की बुराइयाँ उपजती हैं। जैसे जो भूमि बहुत दिन से बञ्जर पड़ी है सो कांटों और भटकटैयों से भर कर जङ्गल के समान हो जाती है। वैसे ही फ़क़ीरों की दसा है।

वे बारह मास, दिन रात पड़े और बैठे रहते या बेकार और बे काम होके भीख मांगते फिरते हैं सो उनके मन में सब प्रकार की बुरी चिन्ता, छल और कुकर्म्म जङ्गल के समान क्यों न उपजेगा ? क्या देह पर भभूत और तिलक लगाने से या कण्ठी बांधने से, या माला फेरने से चिमटा तूंबा रखने से उनका मन कुछ शुद्ध हो गया ? कभी नहीं। हम लोग आप जानते हैं। फ़क़ीर वैरागी अधिक करके बड़े छली और कपटी होते हैं।

दोहा

सुमिरन कर में सुरत न हर में, कहो भेष यह कैसा।
ऊपर से तो सिद्ध बन बैठा, अन्तर पैसा पैसा॥

फिर सारा योग और तपस्या जो फ़क़ीर लोग करते हैं, जैसे पञ्चाग्नि तापना और उलटे होके लटकना और धूनी पीके रहना वग़ैरह इससे उनका क्या भला होता है ? क्या इनसे उनका मन निर्मल होता है। जो ऐसा होता तो योगी वैरागी किस लिये और सब मनुष्यों से अधिक बुरे होते हैं ? फिर देह पर राख मलने से या बड़े बड़े तिलक लगाने या माला फेरने से क्या प्राप्त होता है।

दोहा

माला फेरत जन्म गया, और गया न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, तू मन का मनका फेर॥

कितने फ़क़ीर ऐसे निर्लज्ज होते हैं कि पशु के समान नंगे होके केवल लंगोटी बांधे फिरते हैं। उनका हाल देख के हम क्या कहें। जब तक मनुष्य में कुछ संकोच हो तब तक

वह मनुष्य ही रहता है जब लाज संकोच छोड़ा तब पशु बन गया।

दोहा

मूड़ मुड़ाये जटा बढ़ाये, नङ्गा फिरे जैसे भैसा।
खलड़ी ऊपर राख लगाये, मन जैसे का तैसा॥

बात यह है कि सारी फ़क़ीरी योग वैराग जो है सो बुरी है क्योंकि परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध है। उसकी आज्ञा यह है कि जिनके हाथ, पैर और अंग ठीक ठीक हों सो अपनी मिहनत का पैसा कमावें, गृहस्थी करें और दूसरे लोगों के संग मेल मिलाप से रहें। परमेश्वर यह नहीं चाहता कि हम निर्मोही होके और घर द्वार के काम काज से हाथ धोके जङ्गल में जाकर जङ्गली बन जावें।

बहुत लोग अपने पाप कटवाने के लिये तीर्थ यात्रा करते हैं। हिन्दुस्तान में अनेक तीर्थ हैं; जैसे काशी, प्रयाग, जगन्नाथ और बद्रीनाथ आदिक। यात्री लोग अपना घरबार छोड़ कर, दौड़ धूप उठा कर सम्पत्ति लुटा कर तीर्थों में जाते और स्नान पूजा करते हैं। पर विचार करना जाहिये कि तीर्थ करने से क्या फल मिलता है यात्री तो स्नान करके शरीर का मैल छुड़ाते हैं। इसमें कुछ सन्देह नहीं पर पहिले हम प्रमाण दे चुके हैं कि देह का मैल जल से चाहे छूटे तो छूटे पर मन का मैल कभी नहीं छूटेगा। फिर तीर्थवासी ब्राह्मण पण्डे अर्थात् गङ्गापुत्र और गयावाल, प्रागवाल, मथुरिये आदिफ जो हैं उनका चाल देखिये। वे तो आप नित्य स्नान किया करते और तीर्थ करने वालों को नहलाते हैं और सदा तीर्थ में रहते हैं। सो चाहिये था कि वे सब लोगों से शुद्ध, धर्म्मी होते; नहीं तो और कौन शुद्ध और पवित्र हो सकता है। पर हम सब जानते हैं कि

वे तीर्थियों पर कितना अन्याय और उपद्रव करते हैं पहिले लोभ के मारे ये धनवान यात्रियों के पीछे पड़ते हैं कि उनकी स्नान पूजा करायें क्योंकि उनसे दान दक्षिणा अधिक मिलता है। और बिचारे कंगाल लोगों की कुछ चिन्ता नहीं करते क्योंकि उनके पास कुछ धन नहीं है। फिर जब यजमानों को पकड़ लिया तो उन्हें जल्द अपने हाथ से निकलने नहीं देते। पहिले फुसला फूसला के उनका रुपया पैसा लेते हैं फिर जब और नहीं मिलता है तब अनेक उपद्रव करते हैं। अब विचार करो कि जो ब्राह्मण पण्डे लोग सदा तीर्थों में रहते हैं और सर्वदा स्नान किया करते हैं जब उनमें ऐसे औगुण, लालच, उपद्रव प्रगट होते हैं तो फिर तीर्थ का गुण और माहात्म्य कहां रहा। और जब गुरुओं के औगुण और पाप क्षेत्रों में नहीं कटे तो हमारे कहां से कटेंगे।

तीर्थ यात्रा

लोगों के मन में यह सन्देह भी नित्य बना रहता है कि हमारा पाप तीर्थ में नहीं कटा। घर बार छोड़ के और पांव तोड़ के पैसा उड़ा के और दौड़ धूप उठा के वे पाप कटवाने तीर्थ में आए। अब देह को धोके, मन में चंचल होके पैसा रहित और पाप सहित फिर घर को लौट आए। कहिये तीर्थ यात्रा से क्या लाभ हुआ? हानि तो हुई और लाभ केवल एक ही निकला कि शरीर का मल छूटा पर यह लाभ गाँव के कुएं के जल से भी हो सकता था फिर दूर क्यों गए?

दोहा

तीर्थ गये तीन जन, चित्त खोटा मन चौर।
एकहु पाप न काटियाँ, दस मन लादे और?

इन सब बातों को सुन या पढ़ कर यदि कोई कहे कि हमारा धर्म्म परम्परा से चला आता है और हमारे बाप दादे उसे मानते थे सो हम भी मानते हैं क्योंकि परम्परा की बात छोड़ना न चाहिये। इसका उत्तर यह है कि जो परम्परा की सब बात माननी उचित हैं तो छल, झूठ, चोरी और सब प्रकार के पापों को भी मानना चाहिये क्योंकि वे भी परम्परा से चले आते हैं। एक दृष्टान्त सुनो। किसी ने एक ठग से पूछा कि तुम क्यों लूट, घात और ठगई करते हो इसे छोड़ो क्योंकि बुरी बात है। उसने उत्तर दिया हम काहे को छोड़ें लूटने और मारने का हमारा काम परम्परा से चला आता है। हमारे बाप दादे ठगई करते चले आये हैं सो हम ठगई क्यों न करें। परम्परा की बात को छोड़ना न चाहिए। अब कहिये जो ठग ऐसा कहे तो क्या उसकी बात मानोगे ?

एक दूसरा दृष्टान्त सुनिये। एक धोबी था जो अपने गदहे पर एक अलङ्ग कपड़े की गठरी लादता और दूसरी अलङ्ग एक चक्की का पाट लटकाता था। लोग यह देख के बोले कि ऐसी नादानी क्यों करते हो, आधा कपड़ा इधर और आधा उधर करके लादो तो चक्की के पाट का कुछ प्रयोजन न होगा। धोबी बोला कि यह बात हमारे परम्परा से चली आती है हमारे बाप दादे ऐसा ही करते थे। इसलिए हम उसे न छोड़ेंगे।

बात यह है कि जैसे दूसरों की बातें वैसे ही बाप दादों की बातें भी बिना बूझ विचार के न मानना चाहिये। शायद सच्ची हो शायद झूठी। बुद्धिमान जन जो हैं, सो सब कुछ बुद्ध विचार की कसौटी पर कसते हैं, जो खरा निकले सो वह रखते हैं और जो खोटा ठहरे सो फेंक देते हैं।

ऐसी बात जिसे बहुत लोग मानते हैं

कोई कहे कि जो धर्म्म सब हिन्दू लोग मानते हैं सो हम क्यों छोड़ें ? जो कुछ बहुत लोग मानते हैं सो हम भी मानते हैं पर यह बात बुद्धिमान मनुष्य की नहीं है। जो दस बीस जन बिना सूझे बूझे एक एक करके किसी कूप में गिरें तो क्या आप भी भेड़िया धसान करके आंख फोड़ बुद्धि छोड़ उनमें कूद पड़ोगे ? कभी नहीं, पर कहोगे मूर्ख और पागल जो हैं सो बिना समझे बूझे ऐसा काम करें तो करें हम समझदार कभी नहीं करेंगे। भला इस रीति से अज्ञान और मूर्ख मनुष्य विना जाने बूझे हिन्दू धर्म्म का पक्ष करें तो करें पर तुम सोच विचार के उसे परखो और जब उसे खोटा पाओ तो त्याग दो।

शास्त्र पुराणों का मत

पर किसी के मन में यह बात न आये कि हमारा मत जो है सो शास्त्र पुराणों का मत है और शास्त्र पुराणों की बात हम कैसे छोड़ें ? पहिले देखा चाहिये कि आप की पुस्तकों में परमेश्वर का मत है या मनमता। आप के चार वेद, छः शास्त्र और अठारह पुराण हैं। सब पण्डित जानते हैं कि उनमें एक ही बात नहीं है। एक वेद कुछ बताता है और दूसरा वेद और कुछ बताता है। फिर जो एक शास्त्र कहता है सो दूसरा काटता है। अठारह पुराण अठारह पन्थ बतलाते हैं, आप के शास्त्र वेदों को खण्डन करते हैं और शास्त्र और वेदों के विरुद्ध पुराण हैं। फिर जब चार वेद, छः शास्त्र और अठारह पुराणों में ऐसा झगड़ा है और भिन्न भिन्न मत बतलाते हैं तो प्रमाण होता है कि वे सब मनमता हैं। परमेश्वर के मत नहीं हैं क्योंकि परमेश्वर एक ही है और वह सच्चा है। उसकी

दो तीन बातें नहीं पर उसकी एक ही बात है। सो एक ही सच्चे परमेश्वर का एक ही मत चाहिये। अब कहिये उसका एक ही मत कहां है और आपकी पुस्तकों और पण्डितों के न्यारे न्यारे मत कहां हैं। फिर जिन पुस्तकों में इतनी दुबिधा और सन्देह है क्या वे पुस्तकें परमेश्वर की ओर से हो सकती हैं? और क्या उनको मानना चाहिये ?

इन सब बातों से यह साबित होता है कि आप की पूजा पाठ, दान, पुण्य, स्नान नहाना, और तीर्थ यात्रा और जितने जो मुक्ति के उपाय शास्त्र पुराणों में लिखे हैं और जो गुरु पण्डित बनते हैं सो सब व्यर्थ हैं और उनसे हमारी मुक्ति नहीं हो सकती है। अब अगर कोई पूछे कि जब हिन्दू धर्म्म का हाल ऐसा है तो वह पहिले किस प्रकार से स्थापित हुआ और सारे हिन्दुस्तान में क्योंकर फैल गया? इसका उत्तर जैसा कि परमेश्वर की पुस्तक से और बुद्धि ज्ञान से प्रकाश होता है वैसा हम अब बखान करते हैं।

जगत की सारी रचना जो है अर्थात धरती आकाश, सूर्य्य, चन्द्रमा, तारे, समुद्र, पहाड़, पेड़, फूल वग़ैरः उनको देख के सब मनुष्य जान सकते हैं कि उनका एक बनाने वाला या सिरजनहार अर्थात परमेश्वर है और उसका बड़ा पराक्रम और महात्म्य है। अब चाहिये था कि हमारे पुरखे उसी की पूजा करते और धन्यवाद मानते पर उन्होंने ऐसा नहीं किया और परमेश्वर के सच्चे ज्ञान को भूलते भूलते अपनी भावन से बहक गये और उनका निर्बुद्धि मन अँधेरा हो गया। तो भी अहंकार से वे अपने को ज्ञानी और पण्डित जानते रहे। इसलिये वे अज्ञान और मूरख हो गये और इसी मूर्खता से उन्होंने निराकार और अविनाशी ईश्वर का प्रताप और महात्म्य जो

है सो नाश होनेहारी वस्तुओं पर लगाया और भूलते भटकते और परमेश्वर की पूजा त्यागते त्यागते सूर्य्य चन्द्रमा, और तारों की पूजा और मनुष्यों की पूजा और पशु पक्षियों की और कीड़े मकोड़े की और सब प्रकार की मूरतों की पूजा करने लगे। जब सच्चे परमेश्वर को उन्होंने ऐसे छोड़ दिया तब परमेश्वर ने भी उनके मन की कामना के समान उन्हें अशुद्धता और निर्बुद्धता में छोड़ दिया। अब सोचो जो आप का कोई पुत्र बुरा हो जाय तो जब तक वह मां बाप के बश में है तब तक वह डर और लाज के मारे बहुत पापों से और दुर्दशा से बचा रहता है, पर जब मां बाप से अलग हो गया तब वह सोच संकोच को छोड़ छाड़ कर जो मन मानता सो ही करता है और सब प्रकार से पाप और संताप में डूब जाता है। वैसे ही हमारे पुरखों की दशा हुई। जब निराकर परमेश्वर की पूजा उन्होंने छोड़ी तब परमेश्वर ने भी उन्हें छोड़ा और जब वे उससे अलग हुये तब सब प्रकार के भ्रम और अधर्म्म में डूब गये।

नाना प्रकार की पूजाएं

सो हे प्यारे पढ़ने हारो, अपनी और अपने बाप दादों की चाल पर सोचिये। वे परमेश्वर की सेवा और पूजा को छोड़ के बहक गये और तब से आज तक हम लोग उनके बंश के होके भूलते भटकते चले जाते हैं। एक दृष्टान्त सुनिये। एक स्त्री कुछ दिन तक अपने पति की सेवा टहल तन मन से करती रही पर पीछे पराये पुरुषों को देखने से उसका मन अपने पति से फिर गया और वह उसे छोड़ के औरों की सङ्गत करने लगी। अब कहिये ऐसी स्त्री को आप बुरी और वे धर्म्म

कहेंगे कि नहीं और उसका पहिला सत्त और धर्म्म सब नष्ट हुआ कि नहीं ? देखो हमारी और हमारे बाप दादों की यही दशा हुई। उन्होंने और हमने अपने अकेले स्वामी परमेश्वर को त्याग दिया और सेवा और पूजा जो उसको चाहिए थी सो देवियों और देवताओं पर और ब्राह्मणों पर और पशु, पक्षी पर और पीपल, तुलसी पर और गङ्गा जमुना पर और भांति भांति के मूरतों पर और बहुत सी वस्तुओं पर लगाई सो देवी देवताओं, ब्राह्मण, पशु, पक्षी, पीपल, तुलसी और सब प्रकार की मूरत और सूरत और जो कुछ आप पूजते वह सब आप के झूठे स्वामी हो गये और उनको मानना आप का अधर्म्म और कुकर्म्म ठहरा और यह अधर्म्म बढ़ते बढ़ते यहां तक बढ़ गया कि आप अपने एक सच्चे स्वामी और पति परमेश्वर को बिसरा बिसरा तेंतिस कोट देवताओं को मानने और पूजने लगे। अब कहिये आपका मत और धर्म्म कहां रहा ?

सूर्य्य, चन्द्रमा और तारों को परमेश्वर ने आकाश में रखा कि हमें उज्याला देवें। पर हमारे बाप दादे उनकी ज्योति और झलक को देख के उनको देवता समझने और पूजने लगे और हम लोग भेड़िया धसान करके उनको पूजते चले आते हैं।

जब हमारे बाप दादों ने किसी शूरवीर को बड़े चमत्कारी कर्म्म करते देखा या उनका कोई बड़ा प्रतापी राजा हुआ तो वे धीरे धीरे उसको धर्म्मावतार और देवता करके मानने और पूजने लगे। इससे अवतारों की पूजा स्थापित हुई और आप लोग उनकी लीक पर चल के उन्हें पूजते चले जाते हैं। अन्य देशों में इन से कहीं बड़े शूरवीर और राजा हुये और अब भी हैं तौ भी उनकी पूजा कोई नहीं करता है इसलिये कि उन देशों के लोग ज्ञानी होके मनुष्य की पूजा करना बुरी बात जानते हैं।

गुरुओं की पूजा

फिर हमारे बाप दादों ने अपने गुरुओं और पंडों को देखा कि वे हम से अधिक ज्ञानी हैं और शास्त्रों को पढ़ते हैं और हमसे पूजा करवाते हैं। तब वे उन्हें भी देवता समझ के पूजने लगे और आप लोग वैसा ही करके गुरु ब्राह्मणों की पूजा करते चले जाते हो पर इस बात पर सोच विचार नहीं करते कि जैसा हम लोग वैसे हमारे गुरु लोग भी पापी हैं। फिर और और देशों में इन पण्डितों से कहीं बड़े पण्डित हुये हैं और होते हैं उनकी पूजा कोई नहीं करता इसलिए कि वहाँ के लोग ज्ञानी होके मनुष्य की पूजा करना महापाप जानते हैं।

पशु पक्षियों की पूजा

फिर हमारे बाप दादे भूलते भूलते पशुओं को भी पूजने लगे जैसे गाय, सांप, बन्दर, कुत्ता, मूसा वगैरहः। और पक्षी को भी जैसे गरुड़ मोर आदिक पूजने लगे। और मच्छियों को भी। और नदिओं को भी जैसे गङ्गा, यमुना आदिक। और पेड़ भी जैसे तुलसी, पीपल आदिक। और पत्थर भी जैसे सालिग्राम। और बहुत वस्तुओं को पूजा के लिए हमारे बाप-दादों ने ठहराया और लोग भी बिना समझे भेड़िया धसान करके भिन्न भिन्न वस्तुओं की पूजा करते हैं और परमेश्वर की पूजा और सेवा भुला दी है।

हाय! हाय!! सत्य परमेश्वर की पूजा हिन्दूस्तान में कहाँ रही! जब सच्चे निराकार परमेश्वर को हमारे बाप दादों ने छोड़ा तब निर्बुद्धि होते होते और भ्रम के सागर में डूबते डूबते वे नीच और अयोग्य वस्तुओं की पूजा करने लगे। अब आप

कहिये कि निराकार परमेश्वर की पूजा में और पत्थर लकड़ी की पूजा में कितना अन्तर है। आकाश और धरती का अन्तर है कि नहीं।

इस बात का भी विचार करिये कि सारे जगत् में जहाँ जहाँ मनुष्य मूरतों की पूजा करते हैं वहां लोग अनपढ़ और अज्ञान रहते हैं। धर्म्म पुस्तक में यह लिखा है कि मूरत के बनाने वाले और मूरत के पूजने पुजाने वाले दोनों मूरत के समान हो जाते हैं। पत्थर, लकड़ी, मिट्टी, धातु में क्या ज्ञान है। कुछ नहीं। जड़ वस्तु को पूजने से पूजनेहारे आप ही जड़ हो जाते हैं जैसी सङ्गत वैसी बुद्धि। एक बात सुनिये, सैकड़ों बरस हुये यूरोपवासी लोगों के पुरखे भी भारतवासियों के समान मूरतों को और झूठे देवताओं को मानते थे और उस समय वे लोग मूर्ख और निर्बुद्धि थे। फिर जब मसीही धर्म्म के पादरी उनके पास गये और सच्चा धर्म्म उन्हें सुनाया और उन्होंने उसे ग्रहण किया तब से लेके उनकी मूर्खता और अज्ञानता धीरे धीरे जाती रही। उन्होंने मूरतों की पूजा और देवी देवताओं की पूजा नीच और तुच्छ जान के छोड़ दी और मसीही धर्म्म को मान लिया और उस समय से ले के मसीही धर्म्म साथ साथ सब प्रकार की बुद्धि और विद्या भी उनमें उदय हुई और सद्धर्म्म और ज्ञान यहां लों बढ़ा कि विद्या के प्रकाश से पहिले का भ्रम और अधर्म्म का अंधियारा, मूरतों के नाम और पता समेत नष्ट हो गया। किसने भारत देश में पहले २ बड़े बड़े मदर्से और पाठशालाएं स्थापित कीं? मसीहियों ने कीं। ज्ञान और विद्या की पुस्तकें कौन बहुत करके बनाते और छपवाते हैं? कौन लोग अस्पताल और शिफ़ाख़ाने जगह जगह बनाते हैं? मसीही लोग यह सब करते हैं। मसीही धर्म्म के साथ

साथ ज्ञान और विद्या फैलती है और लोग अन्धकार, मिथ्या पूजा और अविद्या पक से दूहते हैं।

हर कहीं देवी देवताओं की पूजा के सङ्ग सब प्रकार के अधर्म्म और कुकर्म्म भी प्रगट होते हैं। जहाँ जहाँ मनुष्यों के मन में परमेश्वर का ज्ञान और डर है तहाँ तहाँ पाप और अधर्म्म का बल टूटता जाता है। पर जहाँ जहाँ परमेश्वर का ज्ञान और उसकी पूजा घटती जाती है या जाती रही है तहाँ तहाँ पाप और अधर्म्म प्रबल होते जाते हैं और उससे लोग बड़ी दुर्दशा में पड़ते हैं। धर्म्म पुस्तक में यह लिखा है कि जब लोगों ने परमेश्वर को अपने ज्ञान में रखना न चाहा तब परमेश्वर ने भी उन्हें मूढ़ बुद्धि में छोड़ दिया कि वे बुरे बरे धर्म्म करें। वे सारे अधर्म्मता से और छिनाले, से बुराई और लालच और दुष्टता से भर गये और डाह और नर-हत्या और बैर और छल दुर्भाव से भरपूर हुये। कानाफूसी करनेहारे और दोष लगानेहारे और परमेश्वर के द्रोही और निन्दा करनेहारे और घमण्डी और दम्भी, बुराइयों के रचनेहारे और माता दपिता के आज्ञा भञ्जक और निर्बुद्धि और विश्वासघाती और मायाहीन और क्षमाहीन और निर्दय हो गये और वे परमेश्वर की आज्ञा तो जानते हैं कि ऐसे काम करनेहारे बध और दण्ड के योग्य हैं तथापि वे केवल आपही ऐसे ऐसे कार्य्य करते पर करनेहारों से प्रसन्न भी होते हैं।

देखो यही बातें सारे हिन्दोस्तान में देखी जाती है। पाप और अज्ञानता इस देश में बहुत बढ़ गई। क्योंकि परमेश्वर का डर और प्रेम जाता रहा और उसकी जगह लोगों ने देवताओं को बनाया और उनपर अपना मन लगाया। अब यदि आप अपने देवताओं के चलन के चरित्रों को सुनें या पढ़ें तो

जान लेंगे कि वे आप निर्लज्ज होके महपाप किया करते थे सो वह पाप से घिनावेगा। जो लंपट है सो कहेगा कि जब देवताओं और औतारों ने बुराई की ता बस हम पराई स्त्रियों के संग कुकर्म्म क्यों न करें? चोर जो है सो कहेगा हम चोरी क्यों न करें? शराबी कहेगा कि हम भांग गांजा या नशे की चीज़ें जी भर के क्यों न खावें और पीवें। पर हम कहां तक ऐसी ऐसी बातें कहें। इन देवी देवताओं के छल बल झूठ चोरी कुकर्म्म और अधर्म्म सोच के हम कहते हैं कि जब तक लोग उनको मानेंगे तब तक हम उनसे अधिक अच्छे क्योंकर बनेंगे। किसी ने ठीक कहा जैसा गुरु वैसा चेला।

प्रिय पढ़नेहारो, आपने देखा कि धर्म्म की ये बातें जिन पर आपका भरोसा है सो कैसी पोच और हलकी हैं और इन उपायों से न तो पाप छूट सकता है, न सच्ची मुक्ति प्राप्त हो सकती है। अब यदि हठधर्मी करके आप इन पोच बातों पर अड़े रहो और इन्हें न छोड़ो तो आप अपना नाश करते हैं। जो धूप में खड़े होके आंखें मून्द के कहो कि आकाश में सूर्य्य नहीं है तो हम आगे क्या कहें।

दोहा

मूरख क्या समझाइये, ज्ञान गांठ का जाय।
कोयला होय न ऊजरा, नौ मन साबुन लाय॥

जो आप में से कोई अपने पाप से उदास निराश होके इन्हीं बातों और उपायों में पापमोचन और मुक्ति खोजे सो ऐसा है जैसा एक मनुष्य जो अपने सिर पर बड़ा बोझ लिये उपासा, प्यासा और थका मांदा होके एक बड़े ऊसर मैदान में भूला भटका फिरता है। चलते चलते उसके पांव कांटों से भर गये और दौड़ धूप के मारे वह घबरा रहा है। वह इधर

उधर देखता है कि कहीं कोई आधार या पेड़ मिले कि जिसकी छाया में बैठे। इतने में दूर से आड़ कुछ दिखाई पड़ी पर जब पहुँचा धोखा निकला। पियास से मरते मरते उसने दूर से कुआं देखा और आनन्दित हुआ। गिरते पड़ते वहां पहुँचा और लोटा डोर निकाला पर हाय कुआं! अन्धा सूखा पड़ा था। थका मांदा होके वह बैठ गया और चिल्ला उठा अरे क्या कोई है जो हमारी सुध ले। इतने में एक ब्राह्मण आया और पूछा कि क्यों ऐसे रोते और चिल्लाते हो? वह बोला हम प्यास के मारे मरे जाते हैं। हमें पानी कहां से मिले? ब्राह्मण ने कहा कि सामने चले जाओ थोड़ी दूर पर एक पोखरी है वहां पियो और यह कह के वह चला गया। पियासे ने कहा कि अच्छा अब हमारा कलेजा ठण्डा होगा और पानी पीने की आस से उसके जी में जी आया। आप को सम्भाल के बड़े दुःख से उस जगह पर जो ब्राह्मण ने बताई थी पहुँचा, तो क्या देखा कि गड़हा तो है पर पानी नहीं कीचड़ है। बस उसकी सारी आशा मिट गई पर प्यास न मिटी। निराश होके और जान से हाथ धोके वह मर रहा है।

देखो उन लोगों की जो ऐसी मिथ्या बातों के द्वारा मुक्ति खोजते हैं यही दशा है। यदि कोई खरे मन से पूछे कि हमारे पाप का बोझ कौन उतारेगा और हमारी मुक्ति की आस पियास कौन बुझावेगा तो वह हिन्दूमत की ऊसर भूमि में अपनी आस के फल न पावेगा। वह इधर उधर भूलता भटकता रहेगा पर धर्म की प्यास न बुझेगी। जो उपाय वह करता है जिस पर वह अपनी मुक्ति का आसरा रखता है सो बालू की भीत या धोखे की टट्टी के समान है। फिर जो वह गुरु के ज्ञान के कुयें में से अपने धर्म्म की पियास मिटाया चाहे तो क्या

देखता है कि गुरु आप अन्धे हैं और उनका ज्ञान रूखा सूखा है। यह बात सच्ची है कि पैसे के लालच से गुरु लोग तो बहुत कुछ उपाय बतलाते हैं कि दान पुण्य किया करो, तीर्थ को जाओ और ऐसे ऐसे बहुत काम करने को कहते हैं पर इन सब उपायों से किसी की मुक्ति की आस कभी पूरी नहीं हुई और न हो सकती है। इस कारण बहुत से लोग ऐसी दशा में हैं जो यह कह के कि जो होगा सो होगा मुक्ति से हाथ धो बैठते हैं।

हे पढ़नेवारो, यह बात सच मानो कि आप के मन में मुक्ति का ठिकाना कहीं नहीं है। सब शास्त्र, वेद, पुराणों में मनमता की बात और कहानियाँ हैं जिनसे आपका दिल केवल बहलाए और बहकाए जाते हैं। आपके गुरु लोग सब कच्चे निकले। वे आप ही भूले हुए और पाप के वश में फँसे हुए हैं सो वे आपको मुक्ति का मार्ग क्योंकर बतावें। धर्म्म पुण्य खोटे और बेकाम हैं क्योंकि आप का हृदय अशुद्ध है। आपकी मूर्ति पूजा से परमेश्वर की निन्दा होती है क्योंकि परमेश्वर निराकार है और मूरत बनाने और पूजने को उसने बरजा है। आप की तीर्थ यात्रा से आप के मन और तन और धन का बिगाड़ होता है पर पापमोचन प्राप्त नहीं होता है। आपकी फ़क़ीरी योग बैराग से पाप नहीं छूटता और न मन सुधरता है अब इस कुदशा में क्या करोगे। क्या निराश होके अपने परलोक की चिन्ता छोड़ोगे? ऐसा मत करो, नहीं तो आप अपने प्राण की हानि करोगे और नरक में पड़ोगे ऐसे निर्बुद्धि और अज्ञान मत हो। जो आप का देह का कुछ रोग हो और वह एक बैद्य की दवा से जाता न रहे तो आप दूसरे के पास जाते हैं। इसी प्रकार मन का रोग जो है वह हिन्दू मत के

उपायों से उतर न जाए तो दूसरे मत के उपाय को परखो। और अब हम आपका परिचय उस वैद्य से कराते हैं और उस उपाय को बताते हैं जिससे पाप का भार निश्चय दूर हो जावेगा और इस लोक और परलोक दोनों में आप के मन को कुशल और कल्याण प्राप्त होगा।

दूसरा भाग

दोहा

सत्य गुरुन को वर्णन करौं, कान धरहु सब कोई।
जगदीश सत्य अवतारा, ईश्वर को सुत जोई॥

वह पुस्तक कि जिसमें सच्चे धर्म्म अर्थात् मसीही मत की बातें लिखी हैं सो धर्म्मशास्त्र कहलाती है उसको परमेश्वर ने अपने भक्तों के द्वारा लिखवाया। और अब हम धर्म्मशास्त्र की बातें बताते हैं। उसमें यह लिखा है कि सारे मनुष्य जितने जो इस संसार में हैं सब पापी हुए और पाप के कारण से दण्ड के योग्य ठहरे। फिर यह भी लिखा है कि जगत को पाप के दण्ड से और पाप के बश से बचाने के लिये प्रभु यीशु मसीह अवतार लेके आया और बड़ा कष्ट उठा के प्राण दिया और फिर मुरदों में से जी उठ के स्वर्ग को गया और जो कोई उसकी बात पर बिश्वास करके उसका शिष्य होता और उसको अपना मुक्ति-दाता जानता है सो उसके पुण्य और प्रताप से पापमोचन और मुक्ति पाता है। इन बातों का अब हम अलग अलग बखान करते हैं। चित्त देकर सुनिये।

पहिले हम इस बात का बखान करते हैं कि सारे मनुष्यों की दशा जन्म स्वभाव से कैसी है? धर्म्मशास्त्र में लिखा है कि परमेश्वर ने पहिले पहल एक पुरुष और उसकी पत्नी को भला और मन का शुद्ध और पवित्र बनाया; पर महादुष्ट आत्मा अर्थात् शैतान ने उन्हें बहका के पाप में फंसाया और उसी से उनका सारा वंश अर्थात् सारे जगत के लोग पापी हो गये। जैसा पेड़ वैसी डालियां होती हैं। जो जड़ कड़वी है तो डालियां भी कड़वी होती हैं। इसी रीति से जो हमारे माता पिता पापी हुए तो सारे जगत के लोग उनके वंश होके पापी ठहरे।

चौपाई

यथा वृक्ष डाली तिहि तैसी।
धारा तथा श्रोत होय वैसी॥
जैसा सांप वंश हो वैसा।
औगुण तेंगुण निकसत कैसा॥

इस से जाना जाता है कि सारे जगत के लोग क्या बड़े क्या छोटे, क्या राजा क्या प्रजा, क्या धनी क्या कंगाल, क्या पंडित क्या मूरख, क्या काला क्या गोरा, सब जन्म और स्वभाव से पापी और अपराधी हैं। मनुष्यों के घमण्ड से इस देश में अलग अलग जाति और अलग अलग वर्ण ठहराये गए कोई ब्राह्मण है, कोई क्षत्री, कोई वैश्य और कोई शूद्र। पर परमेश्वर के सामने न जाति न नाम मरयादा का विचार है, उसके आगे सब लोग एक ही जाति के हैं अर्थात् सब लोग पापी ठहरे।

हम लोगों की शिक्षा के लिये परमेश्वर ने दस आज्ञाएं भी दीं और जो उनको टालते हैं सो पापी होते हैं। अब हम बताते हैं कि पाप क्या है।

जो कोई निराकार परमेश्वर को छोड़ के किसी देवी देवता को मानता और उनको पूजता पुजवाता है और जो किसी की मूरत को नमस्कार करता या करवाता है सो पापी है। जो परमेश्वर के नाम को अकारथ लेता और जो बिना मन लगाते उसको जपता है या उसे झूठ से लेता है सो पापी है। जो अपने माता पिता का और अपने बड़ों का आदर नहीं करता पर उनको तुच्छ जानता है सो पापी है। आप जानते हैं कि बहुत जन की दशा है कि अपने बूढ़े माता पिता पर रिसियाते हैं और उनको गाली देते और खाने को नहीं देते हैं। हां जब तक जीते हैं तब तक उन्हें दुःख और क्लेश देते हैं, परन्तु जब मर जाते हैं तब उनका श्राद्ध करने के लिये तीर्थों को जाते हैं और उनका आदर मान करते हैं।

चौथाई

जियत पिता से दङ्गम दङ्गा।
मरे पिता पहुँचावहिं गङ्गा॥
जियत पिता की पूछी न बात।
मरे पिता को दाल और भात॥

कहो यह टेढ़ी और उल्टी बात है कि नहीं। जब तक मां बाप जीते हैं तब तक उनकी सेवा टहल किया चाहिये और जब मर जावें तब उन्हें परमेश्वर की इच्छा पर छोड़ दिया चाहिये। पर दुष्टात्मा अर्थात् शैतान यह कहता है कि जो तुम अपने मां बाप और बड़ों को उनके जीते जी तुच्छ जानो तो कुछ चिन्ता

नहीं। जब मर जावें तब उनका श्राद्ध करो। अब कहो किस की बात मानना चाहिये।

फिर जो कोई किसी मनुष्य को मार डाले या किसी से डाह और बैर रखे या किसी की बुराई चाहे, जो झगड़ा करे या गाली देवे, या अकारण क्रोध करे या किसी की निन्दा करे, या ऐसी कोई बात करे जिससे दूसरे के तन मन को अकारण दुःख होवे सो पापी है। आप जानते हैं कि अपने बैरी पर क्रोध करके हम बारम्बार चाहते हैं कि उसका सत्यानाश होवे और कितने लोग ऐसे अधर्मी और बुरे हैं कि देवी देवता को कुछ चढ़ाते हैं जिस से उनके बैरियों को नष्ट करें। ऐसी पूजा पर और ऐसे पूजने वालों पर हाय! जो लोग ऐसा करते हैं सो हत्यारे ठहरते हैं।

जो पर स्त्रीगमन या छिनाला करते हैं, जो कुदृष्टि से पराई स्त्री को देखते हैं, जो अपने मन में अशुद्ध और मलीन चिन्ता करते हैं, और ऐसी बुरी और गन्दी बातें बोलते कि जिन से सुननेवालों के मन में अशुद्ध विचार उपजे सो पाप करते हैं।

जो चोरी करते हैं या किसी प्रकार की ठगविद्या करते जैसे कमती तौलना, या डंडी मारना, या सौदा भिगा के या उस में मिलौना करके बेचना, या बानगी के बराबर न देना, या मालिक को ठगने के लिये दूकानदार से मेल करना, या किसी से अधिक बियाज लेना, या किसी की घटी करना, या घूंस देना या और किसी प्रकार का अनुचित उपाय करना, जो कोई ऐसे काम करते हैं सो पापी हैं।

जो कोई झूठी साक्षी देता या दिलवाता है, जो झूठी किरिया खाता या खिलाता है, या जो बिना किरिया खाए किसी प्रकार का झूठ बोलता है, जो पराए माल संम्पत का लालच करता है

और परमेश्वर की दी हुई वस्तुओं पर संतोष नहीं करता सो पापी है।

परमेश्वर की आज्ञाओं का संक्षेप दो बातों में हैं। परमेश्वर को अपने सारे मन से और अपनी सारी बुद्धि से और अपने सारे प्राण से और अपने सारे बल से प्यार करना यह पहिली आज्ञा है। फिर दूसरी यह है कि जैसा आप से प्रेम रखते हो वैसा सब मनुष्यों से प्रेम रखो। जो परमेश्वर को प्यार करता है सो काहे को उसे छोड़ के मूरत पूजेगा, काहे को सच्चे परमेश्वर की पूजा न करेगा, काहे को उसका नाम हलकाई से लेगा। फिर जो सब मनुष्यों से अपने बराबर प्रेम करता है सो क्योंकर किसी से बैर रखेगा, वा किसी की बुराई या घटी करेगा, या झूठ बोलेगा। इससे यह जाना जाता है कि परमेश्वर को प्यार करना और सब मनुष्यों से प्रेम रखना यह वह बड़ी बात है कि जो हम सब को चाहिये और जब तक ऐसा प्रेम हमारे मन में न हो तब तक जो कुछ करें सब का सब पाप ही गिना जाएगा।

अब अपना मन परखिये और विचार करिये कि हमने परमेश्वर की आज्ञाओं को टाल के पाप किये हैं कि नहीं? एक ही दिन में हम कितने पाप के काम करते, कितनी पाप की बातें बोलते और कितनी पाप की चिन्ता करते हैं। फिर जन्म से लेके आज तक जो पाप करते चले आये हैं सो कितने बहुत हैं? इस बात में कुछ सन्देह नहीं कि हमारे पाप और अपराध अगणित हैं। फिर यह सब पाप जो हमने मनसा बाचा कर्मणा से किये हैं, चाहे कोई जाने चाहे न जाने सब के सब परमेश्वर जानता है क्योंकि वह घट घट का अन्तर्यामी है और उसके सामने एक पाप भी छिपा नहीं है, परमेश्वर ने

जब संसार पर दृष्टि की तो क्या देखा कि सब लोगों ने मेरी आज्ञाओं को टाल दिया और पाप से भ्रष्ट हुए हैं। सो उसने कहा अपनी नीति न्याय के समान पाप का दण्ड दिया चाहिए। पर जैसे परमेश्वर धर्म्मी और न्यायी है वैसे वह दयालु और कृपालु भी है। इसलिये जब देखा कि सारे संसार के लोग दण्ड के योग्य ठहरे तब उसने अपनी अपार कृपा से पापियों के लिये एक ऐसा उपाय ठहराया कि जिससे वे पाप के दंड से और पाप के वश से छूट जाएं।

अब हम बताते हैं कि पापमोचन और मुक्ति पाने का कौन सा उपाय है, मन लगा के सुनिये। परमेश्वर का एकलौता पुत्र यीशु मसीह है। वह बड़ी दया और प्रेम से इस जगत में आया कि नर रूप धारण करके पापियों का जो दंड परमेश्वर ने ठहराया था सो अपने ऊपर उठा लेवे और लोगों का निस्तार करे। कोई पूछे कि यीशु मसीह कौन है और उसके चाल चलन का बेवरा क्या क्या है सो हम अब इसका बयान करते हैं।

परम्परा से जब से कि पाप जगत में होने लगा परमेश्वर अपने भक्तों के द्वारा से यह आगम वाणी कहलाता चला आया कि अपने पुत्र यीशु मसीह को जगत का निस्तार करने के लिये मैं ठीक समय में भेजूंगा, सब लोग उसकी राह देखते रहो। जब समय पहुँचा तब प्रभु यीशु मसीह ने यहूदा देश में आकर जन्म लिया। कुछ धूमधाम से नहीं, दीनताई से क्योंकि उसकी इच्छा थी कि वह दीन बने जिस से जगत के दीन हीन पापी लोग उसके पुण्य और धर्म्म के फल पाके धर्म्म में धनी हो जावें। औरों के समान प्रभु यीशु मसीह लीला क्रीड़ा करने या युद्ध लड़ाई करने नहीं आया पर उसने अधम पापियों का निस्तार करने के लिए अवतार लिया। वह

और अवतारों के समान पापियों को मारने नहीं आया पर वह पापियों के पाप को मारने और पापियों को उनके पाप से छुड़ाने आया। वह सब प्रकार के पाप से अलग रहा, सब प्रकार का धर्म्म कार्य्य और धर्मोपदेश करता रहा और लोगों के ऊपर दया करता रहा। एक बात के कहने से उसने अन्धों की आंखें और बहिरों को कान खोल दिए और लंगड़ों को पांव और टुण्डों को हाथ दिये। सब प्रकार के रोगी दुखी लोग यीशु के पास आए और उसने उन्हें चंगा किया। कोढ़ियों ने उसकी दुहाई दी कि हे प्रभु हम पर दया करिये और प्रभु की आज्ञा से उनका कोढ़ जाता रहा। जिन लोगों पर भूत चढ़े थे सो भी उसके पास आए और उसने आज्ञा देके उनमें से भूत निकाल दिए। उसने मुर्दों को भी ऐसा जिलाया जैसा कि हम किसी सोते हुए को नींद से जगाते हैं। फिर जो बुरे लोग उसे सताते और बुरा कहते थे उनका भी वह भला करता था। गाली खाके वह गाली न देता था और दुख पाके धमकाता न था। इस जगत की बड़ाई को तुच्छ जान के वह कहता था मैं सेवा करवाने नहीं पर सेवा करने की और बहुतेरों के लिये अपना प्राण देने को आया हूँ। फिर प्रभु किसी मनुष्य के नाम और मर्यादा का विचार नहीं करता था। बड़े और छोटे लोग, देशी परदेशी पंडित और मूर्ख, धनी और कङ्गाल पुरुष और स्त्री, बालक और बूढ़े जो जो उसके पास आए कि अपने रोग से आरोग हो जावें या मुक्ति का उपदेश सुनें वह कभी किसी को निकालता न था। फिर घट घट का अन्तर्यामी होके वह जानता था कि कौन जन खरे मन से उसके पास आता है और कौन जन कपट से आता है। जो कपटी आते थे कैसे ही बड़े पंडित वे क्यों न हों, उन पर प्रभु यीशु हाय हाय करता था

और जो निष्कपट होके उसके पास आता था कैसा बड़ा पापी या कैसी बड़ी पापिनी वह क्यों न हो वह उसके दुःख और पाप को हर लेता था। रोगी शोकी लोग यीशु के पास आते थे और भले चंगे होके घर को जाते थे। पापी सन्तापी जो रो रो के उसकी दोहाई देते थे सो पापों की क्षमा पाके जै जैकार करते हुए चले जाते थे।

प्रभु यीशु मसीह का उपदेश भी ऐसा था कि लोग आश्चर्य करके कहते थे वह हमारे पण्डितों के समान नहीं पर बड़े प्रतापी और सामर्थी के समान उपदेश देता है। उपदेश की दो चार बातें हम अब लिखते हैं।

एक समय प्रभु यीशु ने कहा कि जो मन में दीन हैं सो धन्य हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। जो शोक करते हैं सो धन्य हैं क्योंकि वे शांति पावेंगे। जो कोमल स्वभाव रखते हैं सो धन्य हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। जो धर्म्म के भूखे और प्यासे हैं सो धन्य हैं क्योंकि वे तृप्त होंगे। जो दया-वन्त हैं सो धन्य हैं क्योंकि वे दया पावेंगे। जिनका मन पवित्र है सो धन्य हैं क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। मेल करवैये धन्य हैं क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहावेंगे। जो धर्म्म के लिए सताये जाते हैं वे धन्य हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

दूसरे समय प्रभु यीशु ने यों कहा तुम सुन चुके हो कि कहा गया है अपने पड़ोसी को प्यार कर और अपने बैरी से बैर कर पर मैं तुमसे कहता हूँ अपने बैरियों को प्यार करो, जो तुम्हें स्राप देवें उन्हें तुम आशीष देओ, जो तुमसे बैर करें उन का भला करो और जो तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हें सतावें तुम उनके लिये प्रार्थना करो, कि तुम अपने पिता के जो स्वर्ग में

है सन्तान ठहरो। क्योंकि वह अपने सूर्य को भलों और बुरों पर उदय करता है न्यायियों और अन्यायियों पर मेंह बरसाता है।

फिर एक समय प्रभु ने यह कहा यदि तुम लोग मन न फिराओ और बालकों के समान न बनो तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करोगे। इसका अर्थ यह है कि जो अपना सारा अहङ्कार अर्थात् अपने नाम और कुल और धर्म्म का अभिमान न छोड़ो और बालक के ऐसे दीन हीन होके सुधाई से परमेश्वर को न मानो तो मुक्ति न पाओगे।

एक बार एक पंडित जो मुक्ति का खोजी था प्रभु यीशु के पास आया और प्रभु ने उससे कहा मैं तुझे सत्य सत्य कहता हूँ कि जब तक मनुष्य फिर के उत्पन्न न होवे अर्थात् जब तक उस का मन और स्वभाव नया न होवे और वह परमेश्वर की ओर न फिरे तब तक वह परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकता। जो शरीर से उत्पन्न हुआ सो शरीर है और जो आत्मा से उत्पन्न हुआ सो आत्मा है उसी पंडित से प्रभु ने यह भी कहा कि **परमेश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया है कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे**। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को इसलिये जगत में नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा करे परन्तु इसलिये भेजा कि जगत उसके कारण निस्तार पावे।

चौपाई

ईश्वर ने निज कृपा दिखाई।
जगहित लागि मुक्ति ठहराई॥
ईश्वर पुत्र मसीह अवतरेउ।
पापिन के हित अति दुख सहेउ॥

जो नर निज चाहें कल्याणहिं।
हिय विश्वास तासु पर आनहिं॥
बन्धु प्रतीत मसीह पर ठानहु।
आज्ञा कुछ तारक का आनहु॥
तब दुःख पाप नरक से बचिहो।
सदा स्वर्ग में हर्षित बसिहो॥

देखो प्यारो, प्रभु यीशु मसीह की उपदेशमाला के ये दो चार मोती हैं। जो अधिक देखने चाहो तो धर्म्मशास्त्र के उस भाग में जहां प्रभु यीशु मसीह की निज चर्चा है पढ़ो।

ऐसे ऐसे नेम और प्रेम के काम करके और सत्य धर्म्म का उपदेश सुना के प्रभु इस संसार में अपनी महिमा और प्रताप प्रगट करता रहा। बारम्बार उसने अपने शिष्यों से यह भी कहा कि वह दिन आता है कि जिसमें मेरे बैरी मुझे पकड़ेंगे और क्रूस के खम्भे में चढ़ा के मार डालेंगे, पर तीन दिन पीछे मैं फिर जी उठूंगा। जो मैं चाहता तो अपने को बचाता पर अपने लोगों की मुक्ती को मैंने अपने सिर पर लिया है और इस कारण मैं अपनी इच्छा से उनके लिये अपने प्राण को बलिदान करके दे दूंगा। सो जैसा प्रभु ने कहा वैसा ही हुआ। उसने अपने को दुष्ट लोगों के हाथ में सौंपा। उन्होंने उसे मार डालने के लिये पकड़ा और जब उसमें कुछ दोष न पाया तब झूठे गवाहों के सहारे से उसे दोषी ठहराया। फिर उसे कोड़े मारे और अनेक प्रकार का अन्धेर और उपद्रव उस पर किया। तिस पर भी प्रभु कुछ नहीं बोला। अब क्रूस का खम्भा अर्थात् एक लम्बी लकड़ी जिसके ऊपर एक दूसरी लकड़ी आड़ी जड़ी थी उसको भूमि पर डाला और प्रभु यीशु मसीह को इस पर लिटाया और उसके दोनों हाथ फैला के हथेलियों में और

दोनों पांवों में बड़ी कीलें ठोंकी। तब लोगों ने उस क्रूस को जिस पर प्रभु यीशु जकड़ा था भूमि में गाड़ के खड़ा किया और प्रभु यों महाकष्ट में होके और अपना लहू बहाके छः एक घंटे तक उस खम्भे पर चढ़ा रहा। उसके दुःख देने वाले उस पर हंसी ठट्ठा करते थे पर प्रभु यीशु दुःख में होके उनके लिये परमेश्वर से यह बिनती करता था कि हे पिता उनको क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या करते हैं। फिर दोपहर को एकाएक बड़ा अंधेरा छा गया और तीसरे पहर तक बना रहा। तब प्रभु ने यह कहा कि पूरा हुआ और हे पिता मैं अपने आत्मा को तेरे हाथ में सौंपता हूं, यह कह कर प्राण त्यागा। उसके मरने के समय भूमि कांपने लगी, पहाड़ तड़क गए और क़बरें खुल गईं और सब लोगों पर बड़ा भय छा गया और कोई २ बोला सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।

तब दो कुलीन पुरुषों ने जो प्रभू के शिष्य थे बेधड़क हाकिम के पास जाके उसकी लाश मांगी। उन्होंने उस लाश के दोनों हाथ पांव से कीलें निकाल के उसको खम्भे पर से उतार के कपड़े में लपेटा और एक क़बर में जो पहाड़ में खुदी हुई थी रखा। और क़बर के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लगा दिया। फिर उसके बैरियों ने पहरुए बैठा कर उसकी क़बर को रखवाली करवाई।

तीसरे दिन तक प्रभु यीशु की लोथ क़बर में रही पर तीसरे दिन अर्थात् इतवार को क्या हुआ। बड़े तड़के भूईंडोल हुआ और परमेश्वर के एक दूत ने स्वर्ग पर से उतर के पत्थर को क़बर के मुंह से सरकाया। तब प्रभु यीशु मसीह उसमें से जीता होकर निकल आया और चालीस दिन तक अपने शिष्यों को दर्शन देता रहा और उनसे बातें कीं। फिर एक दिन उन्हें

इकट्ठा करके उनसे कहा स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया इसलिये जाओ और देश देश के लोगों को पिता, पुत्र, पवित्रात्मा के नाम से बपतिसमा देके शिष्य करो और सब कुछ जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है मानने को उन्हें सिखाओ। यों कह कर और उन्हें आशीष देकर वह उनके देखते ही स्वर्ग पर अपने पिता के पास उठ गया।

देखो प्यारो, यह यीशु मसीह का थोड़ा सा बेवरा है। अब उस पर सोचिये और अपने मन में उसे बूझिये। जो आप पूछें कि धर्म्मात्मा ने किस कारण इतना कष्ट और दुःख उठाया तो जानिये कि उसने जगत के पाप का दण्ड भुगतने और परमेश्वर की नीति को सन्तुष्ट करने के लिये यह सब उठाया। एक दृष्टान्त सुनिये एक मनुष्य ने किसी साहूकार से हज़ार रुपये का क़र्ज़ लिया और क़रार किया कि बरस दिन में हम उसको सूद समेत भर देंगे। बरस बीत गया और साहूकार ने अपना रुपया मांगा। बेचारे क़र्ज़दार के पास कुछ देने को नहीं था। पर साहूकार ने नहीं छोड़ा क्योंकि जानता था कि हज़ार रुपये और उनका सूद हमको तो चाहिये। इस विपत में क़र्ज़दार के किसी मित्र ने जो रुपया वाला था साहूकार के पास जाकर कहा हज़ार रुपया और उसका सूद तुम को उससे चाहिये भला हम ही अपने रुपये से भर देते हैं। साहूकार ने बहुत आनन्दित होके रुपया लिया और फारिगखती दी और यों क़र्ज़दार का क़र्ज़ मित्र के द्वारा से भर दिया गया। क्या क़र्ज़दार आनन्दित न होगा। वह बहुत आनन्द करेगा क्योंकि वह जानता है कि जो क़र्ज़ हम धारते थे और भर न सकते थे सो हमारे मित्र की कृपा और दया से सब पट गया। क्या वह उसका बहुत धन्य न मानेगा और उसे प्यार न करेगा।

देखो इस ही रीति हम और आप सबके सब पाप के कारण क़र्ज़दार के समान हो गये हैं। पाप का बोझ जो है सो क़र्ज़ ठहरा और इस बोझ को उतारने को हमारा धर्म्म और पुण्य कुछ काम नहीं आता है। ऐसी लाचारी की दशा में हमारे लिये क्या आशा है। हमारा एक सच्चा महामित्र है वह परमेश्वर का पुत्र प्रभु यीशु मसीह है उसी ने हमारे पाप का निपटारा किया और बदला दिया, उसकी कृपा और दया अथाह और उसका नेम और प्रेम अपरम्पार है। उसने पापियों का पाप अपने ऊपर लिया और उनके पापों के दण्ड का बड़ा कष्ट उठा कर अपना प्राण देकर हमारे पाप का दण्ड आपही भुगत लिया और इस प्रकार न्याय पूरा किया और हम सब लोगों के लिये पापमोचन और मुक्ति को तैयार किया। अब उचित है कि सब लोग इस बात के सुनने से मगन और आनन्दित हो जावें और पाप क्षमा और मुक्ति पदार्थ प्रभु यीशु मसीह के हाथ से ले लें और उसको प्यार करें।

देखिये परमेश्वर का कैसा बड़ा प्रेम है। हमने तो कुछ ऐसा धर्म्म कर्म्म नहीं किया या कुछ ऐसा पुण्य नहीं कमाया कि जिसके लिये वह हमें प्यार करे। जन्म से लेकर आज के दिन तक हम कर्म्मों से और बातों से और मन ही से उसका पाप करते चले आए हैं। हाँ अब भी दिन दिन पाप किया करते हैं और परमेश्वर की आज्ञाओं को टालते जाते हैं तौ भी वह हम पर दया किया करता है। कोई भिखमंगा हो जिस पर यदि आप नित दया कीजिये जिसे दिन दिन खाने को दीजिये और जिसका आप हर प्रकार से बहुत भला कीजिये और फिर वह आप का धन चुरावे और गाली देवे और रात दिन आपकी बुराई करे क्या आप ऐसे बुरे मनुष्य को प्यार करेंगे? कभी

नहीं पर उसे निकाल देंगे और अपने सामने न आने देंगे। अब देखिये उस बुरे मनुष्य की दशा ठीक हमारी सी दशा है। परमेश्वर हम पर नित दया किया करता है हमें खिलाता पिलाता है और रात दिन हमारा भला करता है, फिर भी हम उसके साथ क्या क्या करते हैं रात दिन उससे बैर करते, जो कुछ कि उसने मना किया सो ही करते। और जो कुछ कि उसने करने को आज्ञा दी सो नहीं करते। परमेश्वर की आज्ञा है कि केवल एक ही निराकार परमेश्वर की पूजा करना देवी देवता या मूरतों की पूजा न करना तौ भी हम करते हैं और परमेश्वर की पूजा बिसारा देते हैं। उसकी आज्ञा है कि चोरी न करना, छल बेईमानी न करना, किसी को गाली न देना, झूठ न बोलना, छिनाला न करना, घमण्ड और आपस्वार्थ न करना, उसने ऐसी ऐसी आज्ञाएं और भी दीं और हम यह सब जानते हैं, पर कुछ नहीं मानते। आज तक उनको नहीं माना, सच्चे मन से एक भी नहीं मानी पर रात दिन उन्हें टालते जाते हैं। क्या यह परमेश्वर से बैर करना नहीं है। हाँ इस बात में कुछ सन्देह नहीं कि आप उससे बैर किया करते हैं। क्या परमेश्वर आप से बैर करता है? वह नहीं करता है। वह जगत को प्यार करता है और प्यार करके जो उसका सबसे प्यारा था सो उसके लिए दिया। क्या दिया? उसने अपना इकलौता प्यारा पुत्र दिया और उसे इस जगत में भेजा जिससे हमको पाप से और नरक की अकथ पीड़ा से बचने को वह हमारे लिये महादुःख और महाकष्ट उठावे और अपना प्राण देवे और यूं पाप क्षमा करावे और हमें मुक्ति दिलावे। क्या परमेश्वर के प्रेम पर सोचने और ध्यान करने से हमारा पत्थर सा मन मोम नहीं हो जाता है। जो

ऐसे प्यार की लौ से मोम न हो जावे तो किस बात से होगा ? और जो किसी बात से न हो और पाप उसके प्यार को हलकी बात जानो क्या यह उचित नहीं कि परमेश्वर अपना क्रोध हम पर भड़कावे और आप को घोर नरक में डाल देवे।

परमेश्वर के प्यार पर थोड़ा और ध्यान करो। जगत के सब लोग जब पाप से भ्रष्ट हो गये कि परमेश्वर की आज्ञाओं को कोई नहीं मानता और उसकी पूजा छोड़ के लोग जड़ वस्तु की पूजा करने लगे तो अपनी नीति और धर्म्म के अनुसार सारे संसार के लोगों को दण्ड देना चाहिये था। परन्तु यह न करके वह आप उनका बदला हो गया और यीशु मसीह में उसने आप जगत में उतर के और नर रूप धारण करके उनके पापों का दण्ड अपने ऊपर उठा लिया और उनके दण्ड का दुःख और कष्ट उठाकर और अपना प्राण उनके लिए देकर उनका निस्तार किया और इस प्रकार अपना धर्म्म और न्याय दया और कृपा पूरी प्रकट की।

क्या यह बड़ा प्रेम नहीं है ? फिर सोचिये कि कितना कष्ट और क्लेश उस निर्दोष ने उठाया, कितना डाह और बैर सह लिया, कितनी गालियाँ चुपचाप रह के खाइ और यह सब कुछ जगत की मुक्ति के लिये सहा। यह बड़ा प्रेम है कि नहीं ? वह निर्दोष मारा और कूटा गया, उसके सिर पर बड़े बड़े कांटे चुभाये गए, उसकी पीठ पर कोड़े लगाये गए, उसके हाथ पांव पर कीलें ठोकी गईं। उसकी देह लोहू लुहान हो गई उसने अपना प्राण भी दिया। यह सब कुछ प्रभु ने पापियों की मुक्ति के लिये किया। कहिये यह महाप्रेम है कि नहीं ? इस बात को

भी मन लगा के विचार करिये कि प्रभु यीशु मसीह पापरहित और मन का निर्मल और पवित्र था। उसमें पाप का लेश भी नहीं पाया गया। बस जो दुःख दर्द उसने सहा सो जगत के उद्धार के लिये सहा। हम ही ने पाप किया और पाप करके परमेश्वर के क्रोध और महादण्ड के योग्य हुए। फिर हम लोगों के बदले में हाँ सारे जगत के लिये प्रभु ने यह सब आपदा उठा ली। हम फिर पूछते हैं क्या यह महा प्रेम है कि नहीं? क्या इस पर सोचने और ध्यान करने से कठोर मन कोमल नहीं होता? प्रेम से प्रेम उपजता है। क्या प्रभु यीशु का प्रेम आपके मन में प्रेम नहीं उपजावेगा? क्या वह मन ऐसा सुस्त और कठोर पड़ गया कि दया और प्यार की बातें उसमें कुछ काम नहीं करतीं? यह ऐसी चट्टान है या ऐसी ऊसर भूमि है कि जिसमें नेम और प्रेम का पेड़ उग नहीं सकता? भाइयो अपना मन कहाँ तक कठोर करते जाओगे। जो ऐसा करो तो ठीक जानो कि थोड़े दिनों में आप अपना नाश करोगे।

यह सच जानो कि प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर ने सारे जगत का मुक्तिदाता ठहराया न केवल एक देश के लिये परन्तु सब देशों के लिये। प्रभु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि तुम सब देशों में जाके मुक्ति का समाचार प्रचार करो। इस पर वे मसीह धर्म्म के प्रचार के लिये देश देश गये और उनका उपदेश और उनके पीछे उनके शिष्यों का उपदेश सुन के बहुत लोग अपने अपने मनमते को छोड़ के यीशु मसीह के चेले हो गये और इस रीति से मसीही धर्म्म जगत में फैलता चला जाता है।

इस छोटी पोथी के द्वारा हम भी आपको जो उसे पढ़ते या सुनते हो मुक्ति का मङ्गल समाचार देते और कहते हैं

कि प्रभु यीशु मसीह हिन्दुस्तान के लोगों का भी मुक्तिदाता है और उसको छोड़ और कोई दूसरा नहीं है। वह ऐसा मुक्तिदाता है जैसा पापी लोगों को चाहिये। वह महापवित्र और हर प्रकार के पाप से न्यारा है। वह सामर्थी, दयालु और परस्वार्थी और कृपाल है। वह पाप का बैरी है पर पापियों का मित्र है। जो जो गुण जगत के निस्तार करने वाले में चाहिये सो प्रभु यीशु मसीह में हैं। वह परमेश्वर का सच्चा अवतार और संसार का सच्चा गुरु है, जो कोई उसके शरणागत होता है उस को वह त्राण का ज्ञान और त्राणदान देता है।

दोहा

सत्य गुरु मेरा सूरमा, करे शब्द की चोट।
मारे गोला प्रेम का, ढाय भरम का कोट॥

अब विचार करो कि हम को क्या करना चाहिये कि जिससे हम को मुक्ति मिले। इसका उत्तर धर्म्मपुस्तक में लिखा है कि प्रभु यीशु मसीह ने कहा जो कोई विश्वास करे और बपतिस्मा पावे सो ही त्राण पावेगा। पर जो विश्वास न करे उस पर दण्ड की आज्ञा होगी अर्थात् वह नरक में डाला जायेगा। इससे यह जान पड़ता है कि मुक्ति के लिये दो बातें करनी चाहिये।

पहली बात यह है कि प्रभु यीशु मसीह पर अपनी मुक्ति का विश्वास रखो। दूसरी बात यह है कि बपतिस्मा लेओ।

प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास रखने का अर्थ क्या है? इसका अर्थ यह है कि जो आप पाप से उदास और निराश होके मुक्ति के खोजी हो तो अपने मनमता को त्याग के और अपने पुण्य और धर्म्म का भरोसा छोड़के अकेले प्रभु यीशु मसीह

पर अपनी मुक्ति का भरोसा रखो और यह सच जानो कि जो धर्म्म और पुण्य उसने कमाया है उसी से हमारा पाप क्षमा होता है। वह हमारा प्रभु, हमारा गुरु, हमारा मुक्तिदाता, हमारा प्राणनाथ है। हम सच्चे मन से उसकी शरण आके उसके शिष्य हो जाएं।

फिर बपतिसमा लेने का क्या अर्थ है? जब कोई सच्चे मन से प्रभु यीशु मसीह का चेला होता है तो उसको चाहिये कि अपने मन के विश्वास को औरों के सामने प्रगट करे। फिर कोई कहे कि चाहे दूसरा जाने चाहे न जाने, हम अपने मन ही मन मसीह पर विश्वास रखते हैं किस लिए प्रकट किया चाहिये? यह विश्वास नहीं है। प्रभु ने यह अपने धर्म्म की एक रीति ठहराई है कि जिसके मानने से वे उसके चेले ठहराये जाते हैं। सो कुछ मन्त्र की बात नहीं है जो आप के कान में फूँकी जावे, पर वह बपतिसमा या जलसंस्कार है। जो शिष्य होना चाहता है सो औरों के सामने साफ मान लेता है कि मैं अपने पहिले मत को छोड़ देता हूँ और प्रभु यीशु के धर्म्म में आता हूं। तब वह नया शिष्य परमेश्वर के अर्थात् पिता पुत्र, और पवित्रात्मा के नाम पर जलसंस्कार पाता है। फिर प्रभु के सब सच्चे शिष्यों के हृदय में पवित्रात्मा बास करता है और उसकी शिक्षा से परमेश्वर के ज्ञान और प्यार में शिष्य बढ़ता जाता है और पाप से घिन करके वह सब प्रकार के धर्म्म के कार्य करता चला जाता है।

इन बातों को पढ़ के या सुन के यदि कोई कहे कि जो अपना हिन्दू मत छोड़ के हम यीशु मसीह के धर्म्म में आवें तो निश्चय करके जाति कुटुम्ब और भाई बन्दी की संगति से निकाले जाएंगे और सब लोग हम से घृणा करेंगे। पर हे प्यारो,

जो तुम अपने प्राण की मुक्ति चाहते हो तो हमारे भाई बन्द और जाति कुटुम्ब क्या कहेंगे या क्या करेंगे यह सब आप मत पूछो, पर यह कहो कि भाई बन्द जो कहें सो कहें और जो करें सो करें हम अपने प्राण के त्राण के लिये और बैकुण्ठ पाने के लिये प्रभु यीशु मसीह के शिष्य हो जाएंगे। यदि आप झूठ बोलो, गाली दो, चोरी करो, वेश्यागमन करो, या कोई कुकम्र्म करो, तो कोई आप को जाति से न निकालेगा क्योंकि सब प्रकार के लम्पट और दुष्ट लोग जाति के भीतर रह सकते हैं। पर यदि अपनी मुक्ति और परलोक के लिये आप अधर्म्म और कुकर्म्म को त्यागने और प्रभु यीशु मशीह के भक्त होना चाहो तो लोग आप को जाति और भाई बन्दी से निकाल देंगे इस पर विचार करके हम यह कहते हैं कि कोई जो यीशु मसीह के धर्म्म के लिये जाति और भाई बन्दी से निकाले जाते हैं सो धन्य हैं क्योंकि वे परमेश्वर के भक्तों में गिने जाएंगे। और ऐसी जाति और भाई बन्दी पर हाय! इस बात पर भी विचार करो कि किसकी बात बड़ी है, परमेश्वर की या जाति कुटुम्ब की? परमेश्वर की बात बड़ी है। सो उसका मानना चाहिये। भला सोचो परलोक में परमेश्वर आप के काम आवेगा या आपकी जाति कुटुम्ब के लोग आप के काम आवेंगे? क्या मरते समय आप के भाई बन्द साथ जाएंगे और परलोक में आपकी जगह जबाव देंगे? कभी नहीं। फिर जो आप सचमुच यीशु मसीह के शिष्य हो जाओ और लोग आपको जाति पांत से निकाल देवें और निन्दा भी करें तो यह जानो कि दुःख केवल दो चार दिन का है और मरने पर परमेश्वर हमको स्वर्गलोक में बैठावेगा। वहाँ आनन्द और सुख चैन से सदा रहेंगे और जो भाई बन्द के डर के मारे आप अपना

विश्वास छिपाओ तो, हाँ, ये आपको न सतावेंगे पर मरने के पीछे लेखे के दिन में तुम से परमेश्वर कहेगा कि तू ने अपने भाइ की बात मानी और मेरी बात तुच्छ जानी इसी लिये अरे कुकर्म्मी तू मुझ से दूर हो। तब भाईबन्द की सङ्गत के बदले में तुम नरक में शैतान और भूतों और दुष्ट लोगों की संगत में युग युग हाय मारते रहोगे।

अब हे प्यारे भाइयो आप लोग जो सचमुच अपने परलोक के लिए चिन्ता करते हो, हम आप से विन्ती करते हैं कि अपने मुक्तिदाता यीशु मसीह को सच्चे मन से ग्रहण करो। यह मत समझो कि यीशु मसीह का नाम बतला के हम परमेश्वर को दूर करते हैं, कभी नहीं। परमेश्वर तो सब का जन्मदाता और रक्षा करनेहारा है। हम यह कह सकते हैं कि परमेश्वर जो है सो महापवित्र और महाधर्म्मी है और सारे संसार के लोग पाप करके अपवित्र और अशुद्ध हो गए। सो हम, तुम, और लोग परमेश्वर से अलग हो गए क्योंकि वह किसी पापी से मेल नहीं रखता। अब परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जो है सो मिलाप कराने वाला है। वह अपने चेलों के पाप के भार उतार के अपने धर्म्म और पुण्य का फल उनको देके उनको स्वर्गलोक में पहुँचाता है। न कोई देवता न गुरु तुम्हारे काम आवेंगे। वे पापी हो के आप निर्बल और लाचार हैं तो तुमको क्योंकर पार करेंगे? प्रभु यीशु मसीह की बात को मत टालो नहीं तो आप अपने मुक्तिदाता को टालते हो और बिना मुक्तिदाता आप की मुक्ति क्योंकर होगी? कोई वैद्य औषधि लिए बाजार में खड़े होकर पुकारे कि हे रोगियो, सब हमारे पास आओ हम बिना पैसा लिए तुमको चगा करेंगे तो निश्चय करके जो अज्ञानता कारण नहीं आते हैं,

सो अपनी मूढ़ता का फल भुगतेंगे। अब देखो प्रभु यीशु मसीह मन के रोग का वैद्य है। वह कहता है कि हे लोगो जो मुक्ति का उपाय खोजते खोजते थक गये हो और पाप के भार से दबे पड़े हो सब मेरे पास आओ और मैं तुमको आराम दूंगा। अब किस लिये आप उसके पास नहीं जाते हो? जब कोई मनुष्य ने अभागा होके अपनी धन सम्पत्ति खो बैठता है तो वह परिश्रम करके धीरे धीरे फिर कुछ जमा कर सकता है। पर जिसने यीशु मसीह को टाल के अपने प्राण को खोया तो वह उसे किसी प्रकार फिर बचा नहीं सकता।

प्रभु यीशु फिर आवेगा

एक बात और सुनो। प्रभु यीशु मसीह जो एक बार पापियों के लिये अपने को दीन और हीन कर के जगत में अवतार ले आया था सो अब स्वर्ग में सिंहासन पर बैठा है। वह जगत के अन्त के दिन फिर आवेगा जिसमें धर्म्मियों को अपने राज्य में बैठाये कि वे उसके सङ्ग सदा आनन्द में रहें और वह अधर्म्मियों का न्याय करे। तब वह एक एक अविश्वासी के सारे पापों का जो उसने मन, बच, काया से किये हैं लेख मांगेगा और उन्हें नरक कुण्ड में डालेगा और सोचो कि नरक महा कष्ट का स्थान है कि जिसे परमेश्वर ने शैतान और उसके दूतों के लिये बनाया है। जो जो उसमें डाले जएंगे सो रो रो और दांत पीस पीस के युगानुयुग आग और गंधक में तड़पते रहेंगे।

धर्म्मशास्त्र में लिखा है कि डरने वाले और अविश्वासी और घिनौने हत्यारे और परस्त्रीगामी और टोनहे और मूरत पूजने वाले और सारे झूठे जो हैं उस झील में जो आग और गंधक से जलती है अपना अपना भाग पावेंगे। इस बात पर

सोचो और भय खाओ। परमेश्वर की कृपा का द्वार सब मुक्ति के खोजियों के लिये अब खुला है, पर जो इस लोक में उसकी कृपा को टालेगा उस पर परमेश्वर का क्रोध परलोक में पड़ेगा। प्रभु यीशु मसीह के प्यार और निस्तार को जो इस लोक में टालेगा, उसके लिये परलोक में बचने की आशा न रहेगी। हे प्यारो, जब तक श्वासा तब तक आशा। जीते जी मुक्ति पाने का समय है। इसलिये मैं तुम्हारी विन्ती करता हूँ कि हे पाप से दबे हुए लोगो, अपने प्राण बचाने के लिये जल्दी करो और प्रभु यीशु मसीह के शिष्य हो जाओ जिससे उसके पुण्य प्राताप से तुम्हारे पाप क्षमा होवें और परलोक में तुम्हारी मुक्ति होवे।

भजन

(१)

१ परमेश्वर के गावें हम गुण और धन्यवाद ।
वह है परमात्मा अन्त और अनाद ॥
सब वस्तु से स्वतन्त्र और सबका आधार ।
स्वयंभु अद्वैत है अदृष्ट निराकार ॥

२ सृष्टिकर्त्ता सर्वरक्षक और सर्वशक्तिमान ।
सर्वज्ञानी पवित्र और न्यायी महान ॥
वह असम और अगम गुणसागर अपार ।
वह सबका है दाता और त्राण करनेहार ॥

३ कौन प्रभु के भेद का कब हुआ सज्ञान ।
मसीह से प्रगटा परमेश्वर महान ॥
दयाल और कृपाल हो बचाने संसार ।
वह धरती पर आया और धरा अवतार ॥

४ पाप मोचन और मुक्ति सब कृपा के साथ ।
अब मिलेगी हम को मसीह जी के हाथ ॥
हे प्रभु दयाल दे हम सब को विश्वास ।
दे प्रेम सब के मन में और मुक्ति की आस ॥

(२)

या जग में है पाप घनेरे ।

काम क्रोध मद माया जग में, बास करत सब के मन में रे ।
या जग पर विश्वास न कीजै, जावेगा यह बीत सवेरे ।
रे मन मूढ़ सचेत रहो तुम, जीवन दिन कत हैंगे तेरे ।
प्रभु यीशु पर धर विश्वासा, वामें हैं आनन्द घनेरे ।
आजिज की यह विन्ती प्रभु जी, पाप क्षमा अब कीजे मेरे ।

(३)

टूटी नाव तूफ़ान है भारी, कैसे मैं उतरूं पार ।
थरथरात तनु निर्बल मानस, कैसे मैं उतरूं पार ।
तैर न जानूं जन्महिं से मैं, पड़ा सिन्धु मझधार ।
नौका पार पहुँचि है तब ही, प्रभु पकड़े पतवार ।
तुम बिन मोहि न और भरोसा, तुम ही करैया पार ।
ईश्वर एक जु एकहि भेज्यो, मुक्तिदान अधिकार ।
भूमि स्वर्ग बिच केवल यीशुहि, नाम है तारण हार ।

(४)

यीशु पर ला ईमान लोग धर्मी बन जाते हैं ॥

१ ओज ईमान मसीह पर लाते, पाप दिलों से हैं धुल जाते ।
वे पाते दिल में चैन, नरक से वे बच जाते हैं ॥
२ नया जनम ईश्वर से पाते, धर्म आत्मा से भर जाते ।
और पाते जीवन-मुक्ति, ईश के पुत्र कहाते हैं ॥

३ दया धरम और नेक कमाई, करते हैं ईश्वर की चाही।
तब, सबर, खुसी, आनन्द, प्रेम से दिल भर जाते हैं॥
४ यीशु के जो आये शरन हैं, दास कहे वे लोग मगन हैं॥
हर हालत में खुशहाल, सदा गुन उसके गाते हैं॥

(५)

मन भजो मसीह को चित्त से वह तुम्हें उद्धारे नरक से॥
१ जो मन भूलो मन से वाको, तो कैसे बचोगे नरक से।
२ दुख सुख दोनों वाके वस में, वह तुम्हें बचाये विपत्त से॥
३ जब तुम पाप में डूब रहे थे, वह आया बचाने स्वरग से॥
४ चार दिनन का मरा था लाजर, वाको जिलाया क़बर से।
५ भूले मत तू वाको आसी, वह तुझे चुना है जगत से।
छोड़ो जग की माया मनुआ, यह जग में सुख नाहीं मनुआ।
इस जग की परतीत न जैहैरे की, झूठा यह जग मनुआ।
यीशु मसीह की शरण गहो तुम, तब स्वर्गवास तुम होपै मनुआ।
वहि समय में क्या करिहो तुम, जब निकसन लगिहै काया मनुआ।
इतनी बिन्ती आसी की सुनिये, यीशु है बचवैया मनुआ।

(६)

अरे मन भूल रहा जग में, अरे मन भूल।
यह जग तो मन छोड़ चलोगे, यीशु को मत भूल।
यह तन का मन आस न कीजै, होगा धूल में धूल।
जब लग जीवन है मन जग में, तभी तलक मन फूल।
सुन रे आसी मन चित्त देके, यीशु है जग मूल।

(७)

यीशु मसीह मेरो प्राण बचैया।

जो पापी यीशु कने आवे, याशु है वाको मुक्ति करैया।
यीशु मसीह की मैं बलि २ जैहूँ, यीशु है मेरो त्राण करैया।
गहिरी वह नदिया नाव पुरानी, यीशु है मेरो पार करैया।
दीनानाथ अनाथ के बन्धू, तुम ही हो प्रभु पाप हरैया।
असी को अपनी शरण में रखियो, अन्त समय मोरी लीजै खबरिया।

(८)

भाई नहिं लै जैहो धन बाँध गठरिया।

जब तोहि काल आनि के घेरे, छोड़ चले घर बार अटरिया।
जो कुछ अंग में होगा तुम्हारे, उसकी सब मिल बाँधे मोटरिया।
अब ही चेत करो नर मूरख, प्रलय काल की करले खबरिया।
एक दिना प्रभु लेखो मंगिहै, तब तेरो है कहु कौन बचैया।
जो प्रभु यीशु मर्म न जान्यो, फुकि जैहो जैसे वन की लकड़िया।
प्रभुदास विनती कर ठाढ़ो, योशु चरण पर ध्यान धरो भैया।

(९)

लखो रे नर आपन निज शरीर।

प्रान पुरुष जब निकसान लागे, रोके को बलबीर।
धन सम्पति अरु कुल परिवारा, पड़ा रहा यहि तीर।
यीशु मसीह की शरण गहो तुम, वही देत मन धीर।
पापिन कारण रक्त आपना, दीन जगत को नीर।
जो यह नीर पियत मन लाई, पावत तन मन धीर।
ताको यीशु अन्त दिना में, देगो अमर शरीर।

(१०)

मसीह जी को सुमरो भाई, तुम स्वर्गधाम सुख पाई।
सुमिरण कीजै चित में लीजै, सत्य शीलता पाई।
आनन्द होयके जै जै कीजै, अन्तर ध्यान लगाई।
वह जिन्दगानी फूल समाना, धूप पड़े कुम्हलाई।
अवसर चूकि फेरि पछितैहो, आख़िर धक्का खाई।
जो चेते सो होत सबेरे, क्या सोचे मन लाई।
कुलि परिवार काम नहीं आवे प्राण छूटि छिन जाई।
सत्य पदार्थ मसीह जग आये, सब पापी अपनाई।
निश्चय बास करो निसिवासर, अमर नगर को जाई।
अन्तर मैल भरा बहु कारी, सुध बुध में बिसराई।
यीशु नाम की विन्ती कीजै, अवगुण में गुण पाई।

॥ इति ॥

THE NORTH INDIA CHRISTIAN TRACT AND BOOK SOCIETY. ALLAHABAD.

47th Edition
2,000 Copies
1945
Price 6 Pies
मूल्य दो पैसा

The Varshny press, Allahabad.